

डॉ. जेफरी नीहौस, बाइबिल धर्मशास्त्र, सत्र 3, आदमिक वाचा, पतन के बाद

© 2024 जेफरी नीहौस और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. जेफरी नीहौस बाइबिल धर्मशास्त्र पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 3 है, पतन के बाद आदमिक वाचा।

अब हम सृष्टि की वाचा के मामलों के साथ फिर से शुरू करते हैं, लेकिन उस वाचा के तहत जीवन पतन और उसके बाद क्या होता है, के बारे में है।

उत्पत्ति 3, इस अध्याय में सर्प की चुनौती, मानवीय विफलता और परिणाम शामिल हैं। सर्प की चुनौती के बारे में क्या? खैर, उसके बारे में पहली बात जो हम पढ़ते हैं वह यह है कि वह किसी भी जंगली जानवर से ज्यादा चालाक था। हिब्रू में चालाक, अरुम शब्द नग्न शब्द का एक समानार्थी है; वे बिल्कुल एक जैसे दिखते हैं।

मुझे लगता है कि शब्दों का खेल उद्देश्यपूर्ण है क्योंकि यह प्रभु के सामने और एक दूसरे के सामने बिना शर्म के शारीरिक और आध्यात्मिक नग्नता का पाप रहित गुण है। यह साँप की चालाकी के परिणामस्वरूप खो जाएगा। तो, साँप क्या करता है? खैर, उसे उस प्राचीन साँप के रूप में पहचाना जाता है जिसे शैतान या शैतान कहा जाता है जो पूरी दुनिया को गुमराह करता है।

और यही वह करता है। वह गुमराह करता है, और वह झूठ के ज़रिए ऐसा करता है, और उसे यीशु ने झूठ का पिता कहा है। वह पाप का व्यापार करता है, जो भ्रामक है।

इब्रानियों ने चेतावनी दी है कि पाप के धोखे से अपने दिलों को कठोर न होने दें। पॉल ने इसे स्पष्ट किया है: अच्छा, पाप क्या है? बेशक, पाप कई तरह के होते हैं। लेकिन मुझे लगता है कि पॉल ने रोमियों में इसकी सबसे सटीक परिभाषा दी है, जो कुछ भी विश्वास से नहीं है वह पाप है।

और हमें यह समझना होगा कि विश्वास क्या है, मुझे लगता है, बाइबल में व्यक्त किया गया है। और यह इब्रानियों 11 में जो आप पढ़ते हैं, उससे कहीं ज्यादा है, हालाँकि यह इसके अनुरूप है, लेकिन हम इसके बारे में बात करेंगे। ये महत्वपूर्ण तथ्य हैं यदि हम यह समझना चाहते हैं कि यहाँ साँप क्या करता है।

तो, साँप आता है, और चुनौती देता है। वह एक हानिरहित प्रश्न से शुरू करता है। अच्छा, क्या परमेश्वर ने वास्तव में कहा था कि तुम्हें बगीचे के किसी भी पेड़ से नहीं खाना चाहिए? गॉर्डन कॉनवेल में मेरे सहकर्मी, डग स्टीवर्ट, साँप को जर्मन लहजे में कहना पसंद करते हैं और कहते हैं, परमेश्वर ने वास्तव में क्या कहा था? तुम यह फल नहीं खाते? यह परमेश्वर का वचन नहीं है।

आपको इस पर यकीन करने की ज़रूरत नहीं है। वह कहते हैं कि सर्प पहला उदार विद्वान था, पहला उच्च आलोचक। लेकिन जो भी हो, यह सवाल हानिरहित लगता है, लेकिन यह काँटेदार है।

क्या परमेश्वर ने वास्तव में कहा था ? यह बहुत जोरदार है; वह परमेश्वर की कही बात पर सवाल उठा रहा है? खैर, उसके सवाल के बारे में क्या, तुम्हें बगीचे के किसी भी पेड़ से नहीं खाना चाहिए? पूरा वाक्यांश वास्तव में वही है जो परमेश्वर ने कहा था, सिवाय शब्द नहीं के। क्योंकि परमेश्वर ने कहा था, तुम बगीचे के किसी भी पेड़ से खा सकते हो।

फर्क सिर्फ इतना है कि साँप इसे उल्टा कर देता है। वह इसे नकारात्मक बना देता है। और यह स्पष्ट रूप से, मुझे लगता है, आगे के सुझावों के लिए आधार तैयार करने के लिए है कि भगवान के दिल में मानव हित नहीं है। यह पहले से ही सुझाव देता है कि भगवान ने मनुष्यों को कुछ अच्छी चीजों से वंचित कर दिया है, बगीचे में किसी भी पेड़ का फल।

खैर, बेशक, महिला जानती है कि ऐसा नहीं है। कि वह और उसका पति वास्तव में बगीचे के पेड़ों से फल खा सकते हैं। और हम समझते हैं कि उत्पत्ति 2 के अनुसार, उसे तब बनाया गया था जब प्रभु ने आदम को यह बताया था।

तो, आदम ने उसे यह बताया होगा। मुझे लगता है कि यही सबसे संभावित परिदृश्य है। और इसलिए वह इसे ईमानदारी से दोहराती है। फिर वह आगे जवाब देती है, और कुछ लोगों ने उसके अगले कथन को भगवान द्वारा मूल रूप से कही गई बातों में एक अनुचित जोड़ के रूप में देखा है।

वह बगीचे के बीच में लगे पेड़ के बारे में यह आदेश दोहराती है कि एक पेड़ ऐसा है जिसका फल हम नहीं खा सकते। और फिर वह कहती है, और तुम्हें इसे छूना नहीं चाहिए। वास्तव में, क्लासिक दृष्टिकोण यह है कि मेरे पास इस मुद्दे को संबोधित करते हुए विंड एंड ईव्स सिन नामक एक पुस्तक प्रकाशन के लिए तैयार है।

क्योंकि प्राचीन व्याख्याकारों से लेकर आधुनिक व्याख्याकारों तक का क्लासिक दृष्टिकोण लगभग सार्वभौमिक है, महिला भगवान द्वारा कही गई बातों में कुछ जोड़ रही है, और इसलिए वह पहले से ही भटक रही है। मेरे प्रिय गुरु, मेरेडिथ क्लेन, जिनसे मैंने बहुत कुछ सीखा, ने यह दृष्टिकोण अपनाया।

मैंने यह बात तब सुनी जब मैं एक छात्र के रूप में उनके व्याख्यानों में शामिल हुआ था, और मैंने सोचा, ठीक है, हाँ, यह बात तो सही है। और यह बात सही भी लगती है। लेकिन इसमें कुछ समस्याएँ हैं, जिन पर हम यहाँ विचार करने जा रहे हैं।

लेकिन समस्या यह है कि यहीं पर आस्था और पाप और उनका रिश्ता आ जाता है। क्योंकि अगर वह परमेश्वर ने जो कहा है उसमें कुछ और जोड़ रही है, तो वह पहले से ही पाप में है। यहीं पर समस्या है।

इसलिए, ऐसा जोड़ना, परमेश्वर के मुँह में ऐसे शब्द डालना जो उसने नहीं बोले, पाप का कार्य होगा। यह परमेश्वर ने जो कहा उसका गलत अर्थ होगा। बाइबल में ऐसा कुछ भी नहीं है जो हमें ऐसा सोचने के लिए प्रोत्साहित करे।

मुझे आपके साथ इस पर थोड़ा विस्तार से चर्चा करने दीजिए। इसे पढ़िए और फिर इस पर और टिप्पणी कीजिए। उनके द्वारा जोड़ा गया यह लेख पिछली कथा की संक्षिप्त प्रकृति के परिणाम के रूप में सबसे अच्छी तरह से समझा जा सकता है।

इसलिए, उत्पत्ति 2 हमें यह नहीं बताता कि परमेश्वर ने निषिद्ध वृक्ष को छूने से भी मना किया है। लेकिन जाहिर है, उसने ऐसा किया क्योंकि अब हमें वह जानकारी उस स्त्री से मिलती है जो अभी तक पाप की स्थिति में नहीं है और अभी तक झूठी नहीं है। उसका कथन पहले के विवरण में शामिल नहीं किए गए डेटा प्रदान करता है।

अब, इस पर थोड़ा और विस्तार से बात करते हैं। अगर वह भगवान के मुँह में ऐसे शब्द डाल रही है जो उसने नहीं कहे, तो वह ऐसा कह रही है जो सच नहीं है। वह झूठी है, जिसका मतलब है कि वह अपने आप ही पाप में है।

और मुझे लगता है कि इसे माफ़ करने का कोई तरीका नहीं है, यह कहकर कि, शायद उसे एडम द्वारा बताई गई बातें गलत याद हैं। या शायद वह मामले को मज़बूत करने के लिए इसमें कुछ और जोड़ रही है। क्योंकि अगर इनमें से कोई भी बात सच है, तो वह अभी भी पाप में है।

वह कह रही है कि भगवान ने कुछ ऐसा कहा जो उसने नहीं कहा। यह सच नहीं है। जो कुछ भी विश्वास से परे है वह पाप है।

बाइबल के अनुसार, विश्वास का अर्थ है ईश्वर को प्रसन्न करना। इसका अर्थ है उसके अस्तित्व और कार्य को प्रसन्न करना। और यही हिब्रू क्रिया का अर्थ है।

पहली बार यह उत्पत्ति 15.6 में आता है, जहाँ आप पढ़ते हैं, शाब्दिक रूप से, अब्राहम, परमेश्वर के लिए आमीन, प्रभु के लिए आमीन। और उसने इसे उसके लिए धार्मिकता के रूप में गिना। हिब्रू में आमीन, आमीन का अर्थ है “ऐसा ही है।”

क्रिया का अर्थ है, जिस तरह से मैं इसे इस प्रयोग के लिए अनुवाद करूँगा, पुष्टि करना, इसे ऐसा बनाना, यह स्वीकार करना कि यह ऐसा है। और मैं इसकी तुलना एक धर्मोपदेश से करूँगा। कोई व्यक्ति मण्डली में धर्मोपदेश सुन रहा है।

और एक समय पर उपदेशक कुछ कहता है। मण्डली में कोई व्यक्ति आमीन कहता है। इसका क्या मतलब है? इसका मतलब है कि उस समय, वह व्यक्ति उपदेशक द्वारा कही गई बात को पूरी तरह से स्वीकार करता है और उससे सहमत होता है।

जब हम मसीह में विश्वास करते हैं तो आप और मैं यही करते हैं। हम देखते हैं कि मसीह कौन है। हम देखते हैं कि उनके दावे क्या हैं।

हम देखते हैं कि उसने क्या किया है, और दावा यह है कि उसने हमारे लिए किया है। अगर हम उससे आगे नहीं बढ़ते हैं, तो हम शैतान से बेहतर नहीं हैं। हम शैतान से बेहतर नहीं हैं।

वह यह सब जानता है। वह कम से कम उतना ही जानता है जितना हम जानते हैं। लेकिन हमारी तरह वह इस पर सहमत नहीं होता।

वह इसका मालिक नहीं है। वह इसे अपने लिए नहीं अपनाता। लेकिन हम अपनाते हैं।

यही विश्वास का अर्थ है। और इसलिए, जैसा कि रोमियों 14:23 में पौलुस कहता है, जो कुछ भी विश्वास से नहीं है वह पाप है। जो, उस समझ पर, हमें दिखाता है कि हमारी स्थिति कितनी निराशाजनक है।

क्योंकि अगर हम हर बात में, हर नैनोसेकंड में परमेश्वर की स्तुति नहीं कर रहे हैं, तो हमारे पास उद्धार की कोई उम्मीद नहीं है। तो, बेशक, मसीह ने इन सबका ध्यान रखा है। और उसकी स्तुति करके, हम उसकी धार्मिकता को अपने नाम कर लेते हैं।

हमें मुक्ति मिल गई है। लेकिन उसके लिए भगवान के मुंह में शब्द डालना, मानो पाप है। और इससे बचने का कोई रास्ता नहीं है।

बेशक, पॉल ने यह स्पष्ट कर दिया है कि ऐसा नहीं था। क्योंकि 1 तीमुथियुस 2 में, वह कहता है कि धोखा खाने वाली महिला पापी बन गई। और मुझे लगता है कि यह कहना बिलकुल असंभव है कि जब वह इस बिंदु पर साँप को जवाब देती है, तो वह पहले से ही धोखा खा चुकी होती है।

वह सिर्फ सवाल का जवाब दे रही है। मुझे नहीं लगता कि यह भी सही होगा, जैसा कि कुछ पुराने यहूदी व्याख्याकार मानते हैं, कि एडम ने उसे गलत जानकारी दी। दरअसल, उसे उस पर भरोसा भी नहीं था।

उसे यकीन नहीं था कि उस पर भरोसा किया जा सकता है। इसलिए, उसने ऐसा दिखाया जैसे कि परमेश्वर के प्रतिबंध वास्तविकता से कहीं ज़्यादा भारी थे। क्योंकि तब वह पाप में था।

तो, इसके अलावा कोई रास्ता नहीं है। खैर, अगर यह सब सच है, तो हम उसके जोड़ को कैसे समझा सकते हैं? और मेरा मानना है कि जोड़ को लैकोनिक शब्द से समझाया जा सकता है जिसका हमने अभी इस्तेमाल किया है। प्रभु ने अपनी कृपा से मूसा के माध्यम से इस शास्त्र को दिया और व्यवस्थित किया।

वह हमें उत्पत्ति 2:17 में कुछ जानकारी देता है। वह हमें स्त्री के माध्यम से और अधिक जानकारी देता है। इसलिए, वह हमें उत्पत्ति 2 में तीसरे व्यक्ति की कथा में कुछ जानकारी देता है। वह हमें उत्पत्ति 3 में पहले व्यक्ति के माध्यम से और अधिक जानकारी देता है। उत्पत्ति में भी यही होता है। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 12 में, अब्राहम और सारा मिस्र जाते हैं।

और वह कहता है, तुम्हें पता है क्या? तुम एक अच्छी दिखने वाली महिला हो। वे तुम्हें देखने जा रहे हैं। वे मुझे मार देंगे और तुम्हें ले जाएंगे।

तो, उन्हें बता दो कि तुम मेरी बहन हो। बाद में हमें पता चलता है कि वह उसकी सौतेली बहन है। तो, यह पूरी तरह से झूठ नहीं है।

लेकिन, आप जानते हैं, इसका उद्देश्य गुमराह करना है। बाद में, उत्पत्ति 20 में, वे अबीमेलेक और गरार के राज्य में प्रवेश करते हैं। और वह उसे वही करने के लिए कहता है।

और अबीमेलेक उसे ले जाता है। अभी तक उसका उससे कोई रिश्ता नहीं है। लेकिन परमेश्वर उसे सपने में चेतावनी देता है।

तुम उसे नहीं पा सकते क्योंकि वह उसकी पत्नी है। और फिर अगले दिन अबीमेलेक ने अब्राहम को इस बात के लिए फटकार लगाई। और कहा, तुमने ऐसा क्यों किया? तुम्हें पता है, हम बहुत बड़ा पाप कर सकते थे।

अब्राम कहता है, ठीक है, मैंने खुद से कहा, मुझे नहीं पता कि इस जगह पर भगवान का कोई डर है या नहीं। और इसके अलावा, जहाँ भी हम गए हैं, जहाँ भी हम गए हैं, मैंने उससे कहा है, इस तरह से तुम मुझसे प्यार जता सकती हो। उन्हें बताओ कि तुम मेरी बहन हो।

खैर, यह पहली बार है जब हमें इसके बारे में पता चला। ऐसा कितनी बार हुआ? हमें नहीं पता। लेकिन उत्पत्ति 12 में, हमें यह तीसरे व्यक्ति की कथा में मिलता है।

उत्पत्ति 20 में, हमें प्रथम-व्यक्ति विवरण मिलता है जो जानकारी को जोड़ता है। उत्पत्ति में एक और मामला। अब्राहम के साथ परमेश्वर के सभी व्यवहार।

आप उत्पत्ति 12 से 22 तक का उदाहरण ले सकते हैं। हम सभी व्यवहारों को देखते हैं। जब परमेश्वर उत्पत्ति 26:5 में इसहाक के साथ उस वाचा की पुष्टि करता है, तो वह कहता है, मैं यह इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि अब्राहम ने मेरे सभी नियमों और आवश्यकताओं और विधियों और विधियों का पालन किया।

खैर, वे क्या थे? हमें नहीं पता। हमें इसके बारे में कुछ भी नहीं बताया गया। उत्पत्ति 17 में उसका खतना किया गया था।

प्रभु ने कहा, मेरे सामने चलो और निर्दोष बनो। लेकिन हमारे पास वे सभी अन्य चीजें नहीं हैं। वे शब्द हैं जो बाद में मूसा की वाचा में दिखाई देते हैं।

इसलिए, मुझे लगता है कि यह एक अच्छी शर्त है कि वे जो भी थे, वे मोज़ेक वाचा में बहुत कुछ जोड़कर फिर से प्रकट होते हैं। लेकिन हम नहीं जानते कि वे क्या थे। लेकिन फिर से, आपके पास यह तीसरे व्यक्ति की कथा है।

और बाद में, भगवान स्वयं प्रथम पुरुष में आपको पूरक डेटा देते हैं। तो, इतिहास इसी तरह लिखा जाता है। यह संक्षिप्त है।

और इन मामलों में, प्रभु बाद में और अधिक जानकारी प्रदान करते हैं। संयोग से, प्रेरितों के काम में पौलुस की दमिश्क रोड मुठभेड़ के बारे में भी यही सच है, जिसे लूका ने तीसरे व्यक्ति में बताया है। और फिर प्रेरितों के काम 22 और 26 में पौलुस के अपने विवरण।

तो, मुझे लगता है कि महिला की प्रतिक्रिया की सबसे अच्छी समझ यही है। वह अभी तक पाप में नहीं है। वह भटक नहीं रही है।

वह भगवान ने जो कहा, उसे बढ़ा-चढ़ाकर नहीं बता रही है। वह बस सच कह रही है। तो, यह बात हमारे सामने है।

यही उसका जवाब है। खैर, साँप ने जवाब में क्या कहा? खैर, वह कहता है, तुम निश्चित रूप से नहीं मरोगे। इसलिए, वह अब इस मुद्दे को केवल अप्रत्यक्ष रूप से संबोधित नहीं कर रहा है और संदेह पैदा नहीं कर रहा है।

वह सीधे आकर कह रहा है, नहीं, तुम नहीं मरोगे। भगवान ने ऐसा कहा है, लेकिन यह सच नहीं है। क्योंकि क्यों? जब तुम इसे खाओगे, तो तुम्हारी आँखें खुल जाएँगी, और तुम भगवान की तरह हो जाओगे, जो सच में अच्छाई और बुराई को जानते होंगे।

खैर, साँप के इस उत्तर में कई बातें हैं। सबसे पहले, उसका संबोधन दूसरे बहुवचन में है। तुम, बहुवचन, अच्छे और बुरे के बहुवचन जानने वाले होंगे।

आप, बहुवचन, मरेंगे नहीं, इत्यादि। तो, यह महिला के पति को शामिल करके आकर्षण को बढ़ा सकता है, यह दर्शाता है कि, आप जानते हैं क्या? आप ऐसा करते हैं। आपको इसमें अकेले रहने की ज़रूरत नहीं है।

आपके पति भी ऐसा कर सकते हैं। इससे आप दोनों को फ़ायदा होगा। हालाँकि, यह निश्चित रूप से दर्शाता है कि वह दोनों को नीचे लाने के बारे में सोच रहा है क्योंकि वह उन दोनों के संदर्भ में बात कर रहा है।

तो, यह है। इसमें एलोहिम शब्द और कृदंत जानने वाले भी हैं। एलोहिम, जिसका सामान्य रूप से अनुवाद किया जाता है, हमेशा इस अंश में, इस कथन में ईश्वर के रूप में अनुवादित किया जाता है।

लेकिन इसमें स्वर्गदूत भी शामिल हो सकते हैं। कुछ लोगों का मानना है कि उत्पत्ति 1:26 में यही बात कही गई है। आइए हम मनुष्य को अपनी छवि में बनाएँ। परमेश्वर ऐसा कहता है।

हालाँकि, मुझे लगता है कि हमें यह कहना होगा कि, हालाँकि यकीनन स्वर्गदूतों को भी भगवान की छवि में बनाया गया है, स्वर्गदूतों का इंसानों को बनाने में कोई हाथ नहीं था, इसलिए उन्हें

शायद शाही बहुवचन या भगवान की त्रिएक प्रकृति के संकेत के रूप में देखा जाना चाहिए क्योंकि वह लोगों को सीधे स्वर्गदूतों की छवि में नहीं, बल्कि भगवान की छवि में बना रहे हैं। लेकिन वैसे भी, यहाँ संभावना यह है कि एलोहिम में स्वर्गदूत शामिल हो सकते हैं। संयोग से, बाइबल में एक जगह है जहाँ निर्विवाद रूप से, स्पष्ट रूप से, एलोहिम स्वर्गदूतों और भगवान और स्वर्गदूतों को संदर्भित करता है, और वह उत्पत्ति 35.7 में है, जहाँ प्रतिबिंब याकूब के अनुभव पर वापस आता है; यह वह जगह है जहाँ उसने भगवान और स्वर्गदूतों, और सीढ़ी और बाकी सब कुछ देखा।

उत्पत्ति 35.7, आप इसे पढ़ें, और आप पढ़ेंगे कि यह वह स्थान है जहाँ परमेश्वर ने याकूब के सामने खुद को प्रकट किया था, लेकिन हिब्रू में कहा गया है कि यह वह स्थान है जहाँ एलोहिम ने खुद को प्रकट किया था, जिसका अर्थ है, यह परमेश्वर और स्वर्गदूतों की ओर वापस इशारा करता है। तो, वहाँ एक जगह है जहाँ स्पष्ट रूप से, हालाँकि किसी रहस्यमय कारण से, मुझे नहीं पता कि अनुवादक इसका अनुवाद उस तरह से क्यों नहीं करते हैं, लेकिन इसका यही अर्थ है। तो, यहाँ एलोहिम का अर्थ हो सकता है कि आप परमेश्वर और स्वर्गदूतों की तरह होंगे, आप स्वर्गीय प्राणियों की तरह होंगे।

फिर जानकारों का संदर्भ भी अस्पष्ट हो जाता है। इसका मतलब यह हो सकता है कि आप एलोहिम, ईश्वर और स्वर्गदूतों की तरह होंगे, जो अच्छे और बुरे के जानकार हैं, या इसका मतलब यह हो सकता है कि आप अच्छे और बुरे के जानकार होंगे, जैसे ईश्वर और स्वर्गदूत हैं। दोनों ही मामलों में निष्कर्ष लगभग एक जैसा ही है।

लेकिन यह एक प्रलोभन है, और यह भी संभावना है कि अच्छाई और बुराई का संयोजन वही है जिसे मेरिजम या मेरिस्मस कहा जाता है, जिसका अर्थ है वास्तव में सब कुछ। आप भगवान की तरह होंगे, और आप सर्वज्ञ होंगे। तो फिर, परिणाम क्या है? हम जानते हैं कि परिणाम क्या है।

एक संक्षिप्त श्लोक में, जब महिला ने देखा कि पेड़ का फल अच्छा था और वह मनभावन था, तो उसने कुछ लिया और उसे खा लिया। उसने अपने पति को भी कुछ दिया, जो उसके साथ था, और उसने भी उसे खा लिया। ठीक है, यहाँ भी बात करने के लिए बहुत कुछ है।

और फिर, यह बात है कि ये शुरुआती बयान आपको बहुत कुछ बताते हैं और कभी-कभी आपको वह सब कुछ नहीं बताते जो आप चाहते हैं कि वे आपको बताएं। इसलिए, मैं यहाँ कुछ जोड़ना चाहूँगा। जब हम इस विवरण को पढ़ते हैं, तो आपको यह आभास होता है कि महिला वास्तव में एक धोखेबाज़ है।

आप जानते हैं, साँप ने उसके साथ बस एक संक्षिप्त बातचीत की, और बस इतना ही काफी था। मुझे सीएस लुईस को पढ़ना बहुत दिलचस्प लगा, खासकर इस और अन्य मामलों के संबंध में। सेमिनरी में मेरे एक सहकर्मी, डेविड वेल्स ने सीएस लुईस को 13वें प्रेरित के रूप में संदर्भित किया है, जो मुझे लगता है कि थोड़ा बढ़ा-चढ़ाकर कहा गया है, और वह निश्चित रूप से इस बारे में थोड़ा मज़ाक कर रहे हैं, लेकिन इसमें कुछ तो है।

लुईस के पास बहुत अंतर्दृष्टि थी। उन्होंने एक अंतरिक्ष त्रयी लिखी, जिसका दूसरा उपन्यास पेरेलेंड्रा है। उस उपन्यास में, आपके पास वीनसियन एडम और ईव हैं, और आपके पास कोई ऐसा व्यक्ति है जो पृथ्वी के भौतिक विज्ञानी के शरीर में शैतान है, जो वहां यात्रा कर चुका है, और वह महिला को लुभाने की कोशिश कर रहा है।

इस उपन्यास में शुक्र ग्रह एक जलीय ग्रह है। अब आप जानते हैं कि यह सच नहीं है, लेकिन यह एक जलीय ग्रह है, इसमें बहुत सारे तैरते हुए द्वीप हैं, और एक मुख्य भूमि है। लेकिन वहाँ, भगवान के पास एक बात है जो वह शुक्र ग्रह के आदम और हव्वा को बताता है कि उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए, और वह यह है कि उन्हें मुख्य भूमि पर नहीं जाना चाहिए।

जबकि मानव भौतिक विज्ञानी के शरीर में शैतान उसे यह समझाने की कोशिश करता है कि भगवान वास्तव में उसे मुख्य भूमि पर जाना चाहता है, वह चाहता है कि वह अवज्ञा करे। यह उसके विकास में एक कदम होगा। यह उसके लिए अच्छा होगा, और यह उसके पति के लिए भी अच्छा होगा।

और उसे उसे काबू में करने में कई दिन लग जाते हैं। वह लगभग सफल हो जाता है, लेकिन सफल नहीं होता। लेकिन मुझे लगता है कि इससे कुछ पता चलता है।

उत्पत्ति 3 में यह एक बहुत ही संक्षिप्त कथा है। हम नहीं जानते कि सर्प ने स्त्री से कितनी देर तक बात की। हम नहीं जानते कि उसे इस बिंदु तक लाने में उसे कितना समय लगा। लेकिन फिर भी, यह कथा की संक्षिप्त प्रकृति है।

ठीक है, तो, लेकिन इस कथन के बारे में क्या जो हम यहाँ पतन के बारे में पढ़ते हैं? खैर, महिला ने देखा कि पेड़ अच्छा था, और उसने इसे ले लिया। तो, पहला मानवीय पाप उस चीज़ से शुरू होता है जिसे बाद में जॉन ने आँखों की वासना कहा। यह समझना महत्वपूर्ण है कि पाप वस्तु में नहीं बल्कि अवज्ञा में था जिसने महिला और फिर पुरुष को इसे लेने के लिए प्रेरित किया।

शब्दों का यह क्रम बाद में कुछ बहुत ही उल्लेखनीय मामलों में आता है। किसी चीज़ को अच्छा देखना और फिर उसे अपनाना। उत्पत्ति 6 में, परमेश्वर के पुत्र, जिनके बारे में हम बाद में बात करेंगे, उनके बारे में अलग-अलग विचारधाराएँ हैं कि वे कौन हो सकते थे, हालाँकि पूरे इतिहास में बहुसंख्यक दृष्टिकोण यह रहा है कि वे पतित स्वर्गदूत थे, लेकिन हम उन सभी पर गौर करेंगे।

वे जो भी थे, उन्होंने देखा कि पुरुषों की बेटियाँ अच्छी थीं, वही शब्द जो आपको उत्पत्ति 3 में मिलता है। इसका आमतौर पर सुंदर के रूप में अनुवाद किया जाता है। उन्होंने विवाह किया, लेकिन फिर से, उन्होंने वही क्रिया का उपयोग किया जो उत्पत्ति 3 में उपयोग की गई है; उन्होंने उनमें से किसी को भी चुना। इसलिए, यह देखते हुए कि यह अच्छा है, आप इसे लेते हैं।

और जो भी परमेश्वर के ये पुत्र थे, वे बुरे अभिनेता प्रतीत होते हैं। तो, यह अच्छी बात नहीं है। उत्पत्ति 7, बहुत स्पष्ट रूप से, आकान, उसी तरह की बात।

वह कबूल करता है कि उसने जेरिको में एक सुंदर या अच्छा, उत्पत्ति 3 में समान विशेषण, एक बेबीलोन का वस्त्र और चांदी और सोना देखा, और फिर उसने उन्हें ले लिया। तो यह स्पष्ट रूप से, इन तीन उदाहरणों के साथ, एक पापपूर्ण लेने का चित्रण करने का एक पुराना नियम तरीका है। और फिर, यहाँ महिला के मामले में, यह नहीं है कि अच्छे और बुरे का ज्ञान जरूरी एक बुरी बात है, लेकिन यह निषिद्ध था, और वह इसे लेने के द्वारा अपराध कर रही थी।

खैर, क्या वह अकेली थी जब यह सब हो रहा था? दूसरा वाक्य हमें वास्तविक अस्पष्टता के साथ प्रस्तुत करता है। उसने अपने पति को भी कुछ दिया। जो उसके साथ था, जैसा कि एनआईवी और अन्य अनुवादों में अनुवाद किया गया है, उनमें से कई ऐसा ही करते हैं।

खैर, अंग्रेजी कवि जॉन मिल्टन ने अपने महाकाव्य पैराडाइज लॉस्ट में, मनुष्य के लिए ईश्वर के तरीकों को सही ठहराने का प्रयास किया, जो एक कठिन काम लग सकता है, लेकिन उन्होंने सोचा कि वह इसके लिए तैयार हैं। वैसे भी, उन्होंने सर्प को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में चित्रित किया जो किसी को बहकाने का प्रयास करने से पहले चालाकी से उसके अकेले होने का इंतजार करता है। यह एक पारंपरिक दृष्टिकोण रहा है, सोच यह है कि सैन्य रूप से यदि आप किसी दुश्मन सेना पर हमला कर रहे हैं, तो आप रक्षा में कमजोर कड़ी को चुनना चाहते हैं, आप कवच में कमजोर दरार को चुनना चाहते हैं, और वहाँ अपना रास्ता बनाने की कोशिश करते हैं।

अब, यह सच हो सकता है या नहीं भी हो सकता है; हम इसे पाठ से नहीं बता सकते। और इसलिए यह फिर से एक मामला है। साक्ष्य की सीमाओं को पहचानना महत्वपूर्ण है। कथा कहती है कि उसने अपने पति को कुछ दिया, जो उसके साथ था, लेकिन हिब्रू में बस इतना कहा गया है कि उसने अपने पति को दिया, जो उसके साथ था।

अब यह तत्काल उपस्थिति का संकेत दे सकता है, लेकिन ऐसा होना जरूरी नहीं है। उसी अध्याय में आगे चलकर, आदम ने हव्वा को उस स्त्री के रूप में संदर्भित किया जिसे तूने मेरे साथ यहाँ रखा है, जो स्त्री के निर्माण को उसकी सहायता के रूप में संदर्भित करता है। और वहाँ हिब्रू शब्द का शाब्दिक अर्थ है वह स्त्री जिसे तूने मेरे साथ दिया या रखा।

उत्पत्ति 3.6 में पूर्वसर्ग, जहाँ उसने अपने पति को अपने साथ कुछ दिया, हिब्रू में पूर्वसर्ग im है। पूर्वसर्ग बाद में, जिस महिला को आपने मेरे साथ यहाँ रखा है, वह इमाद है, जो वास्तव में दो पूर्वसर्गों को एक में मिला देता है। Im का अर्थ है साथ, और ad दिशात्मक है, इसलिए यह उस महिला का सुझाव देता है जिसे आपने मेरे साथ यहाँ एक करीबी साथी के रूप में रखा है, कुछ ऐसा ही।

लूथर ने इसका अनुवाद इस तरह किया, जर्मन क्रिया zugesellt के साथ, आपने उसे यहाँ मेरे लिए एक साथी के रूप में रखा है। इससे पहले, जेरोम ने लैटिन शब्द सोसिया का इस्तेमाल किया था, जिसका अर्थ फिर से एक साथी है, मेरे समाज के लिए कोई। और इसलिए, अगर हम पहले बाद वाले मामले को देखें, तो यह और भी करीबी संपर्क का संकेत देता है, लेकिन हम यह नहीं कहने जा रहे हैं, मुझे लगता है, कि इसके लिए हमें यह सोचने की जरूरत है कि एडम भगवान से कह रहा है, वह हर पल मेरे साथ थी।

आपने उसे यहाँ मेरे साथ रखा, और वह हर पल मेरे साथ थी। मेरा मतलब है, कौन जानता है कि साँप के आने से पहले वे कितने समय तक बगीचे में थे? कौन जानता है कि वे अलग-अलग समय पर अलग-अलग नहीं थे, बगीचे में अलग-अलग काम करते थे? मैं कहता हूँ कि मेरी पत्नी मेरे साथ रहती है। अच्छा, क्या मेरी पत्नी अब जीवित है? हाँ।

क्या वह अब मेरे साथ है? नहीं। तो, हिब्रू प्रीपोजिशन के बारे में कुछ भी रहस्यमय नहीं है। यह एक अलग भाषा में प्रीपोजिशन है, लेकिन इसका मूल रूप से एक ही मतलब है।

तो, इसका मतलब यह नहीं है कि वह हर समय उसके साथ थी, और वर्तमान मामले में, इसका मतलब यह नहीं है कि जब उसने यह सब होते देखा तो वह उसके साथ था। ठीक है, तो क्या संभव है? खैर, निश्चित रूप से, यह संभव है कि वह उसी क्षण उसके साथ था, या यह संभव है कि वह उसके बाद उसके साथ था, और उसने उसे फल दिया। यह संभव है कि वह आम तौर पर उसके साथ था, लेकिन उसके प्रलोभन के क्षण में नहीं, और इसलिए, फिर से, उसने उसे बाद में दिया।

मुझे लगता है कि एक और संभावना है, जिसे मैंने यहाँ सूचीबद्ध नहीं किया है, लेकिन यह मेरे पहले खंड में है, अब जब उसने उसे दे दिया और उसने उसे ले लिया, तो वह उसके साथ पाप में था, अपराध में भागीदार, अगर आप चाहें तो। इसलिए, और यह भी ध्यान देने योग्य है, हालांकि यह एक परिस्थितिजन्य बात है, परिस्थितिजन्य साक्ष्य का एक हिस्सा, जब प्रभु आता है और उन्हें फटकार लगाता है, तो वह स्पष्ट रूप से उन्हें उन चीजों के लिए फटकारता है जो उन्होंने कीं या नहीं कीं, और वह आदम को सिर्फ खड़े रहने और अपनी पत्नी को वाचा की अवज्ञा या पाप में बहते हुए देखने के लिए नहीं डांटता है, और आप सोचेंगे कि यह एक बहुत बड़ा मुद्दा था, और अगर यह मुद्दा होता तो वह इसका उल्लेख कर सकता था। लेकिन सच्चाई यह है कि, आपने अपनी पत्नी की आवाज पर ध्यान दिया।

तुमने वही किया जो उसने करने को कहा था, और हम इस बारे में भी बात करेंगे। तो, वहाँ है, और फिर, बाद में बाइबिल में, आदम पर कभी भी इसका आरोप नहीं लगाया गया, इसके लिए उसे फटकार नहीं लगाई गई, इसके लिए उसे फटकार नहीं लगाई गई। इसलिए, यह बहुत टिकाऊ स्थिति नहीं है।

मुझे नहीं पता कि कुछ लोग इसे इस तरह से क्यों देखना चाहते हैं, लेकिन इसे बनाए रखना वास्तव में संभव नहीं है। कानून की अदालत में, इस तरह के सबूत टिक नहीं पाएंगे। इसलिए मुझे नहीं लगता कि इसे विद्वत्ता के मामले में भी टिकना चाहिए।

तो फिर पतन के परिणामों के बारे में क्या? मानवीय संबंधों के लिए परिणाम। खैर, मुझे लगता है कि आदम की प्रतिक्रिया की प्रकृति को बहुत पहले से समझा जा चुका है। वह प्रभु से कहता है, जिस स्त्री को तूने मेरे साथ यहाँ रखा है, उसने मुझे पेड़ से कुछ फल दिया, और मैंने उसे खा लिया।

खैर, इसका क्या मतलब है? इसका मतलब यह भी हो सकता है कि, आप जानते हैं क्या? मुझे नहीं पता था कि यह फल कहाँ से आया, लेकिन मैंने इसे ले लिया, और अब देखिए मैं किस मुसीबत में हूँ। लेकिन इससे भी ज़्यादा, वह मूल रूप से भगवान में दोष ढूँढ रहा है। वह कह रहा है, आप जानते हैं क्या? आपने मुझे यह महिला दी, और देखिए क्या हुआ।

मानो वह किसी तरह से निर्दोष है, या वह उस पाप में पड़ने से बच नहीं सकता था जिसमें वह गिर गया। यह निश्चित रूप से जिम्मेदारी से बचने जैसा है। यह बहुत स्वार्थी है।

और यह सच नहीं है, वास्तविकता नहीं है, क्योंकि आखिरकार, उसने चुनाव किया था। हम जानते हैं कि उसने चुनाव किया क्योंकि उसने फल खाया। खैर, भगवान के प्रति महिला की प्रतिक्रिया के बारे में क्या? साँप ने मुझे धोखा दिया, और मैंने खा लिया।

अब, यह एक बेहतर जवाब है क्योंकि वास्तव में यही हुआ था। और ऐसा नहीं है कि वह कोई बहाना बना रही है। ओह, ठीक है, आप जानते हैं, किसी तरह मैंने यह सब एक साथ नहीं रखा।

साँप ने मुझे धोखा दिया। क्योंकि पौलुस भी यही कहता है, बाद में, वह कहता है कि वह वास्तव में धोखा खा गई थी।

और क्या मैं इस पर थोड़ी टिप्पणी कर सकता हूँ? आप जानते हैं, हमें बताया गया है कि पाप की धोखाधड़ी से हमारे दिलों को कठोर न होने दें। पाप की प्रकृति, इस तथ्य के अलावा कि यह विश्वास का नहीं है, परमेश्वर को प्रसन्न नहीं करती है; यह परमेश्वर के अनुरूप नहीं है।

पाप की प्रकृति यह है कि यह झूठ है। यह भ्रामक है। दूसरे शब्दों में, आप और मैं, जिस हद तक हम किसी भी तरह पाप में पड़ जाते हैं, और हमारे अपने विचार हमें पाप में ले जाते हैं, किसी न किसी तरह से, पाप हमें अच्छा लगना चाहिए।

यह ऐसा दिखना चाहिए जैसे कि यह हमें कुछ अच्छा दे रहा हो। पता चलता है, आप जानते हैं, हम सोचते हैं कि यह फल है। लेकिन यह हमारे मुंह में राख बन जाता है।

लेकिन यह अच्छा लगता है। और इसीलिए यह काम करता है क्योंकि हम अच्छे काम के लिए बने हैं।

और इसलिए, अगर दुश्मन हमें लुभाने की कोशिश कर रहा है, तो वह जो बुरा है उसे अच्छा दिखाने की कोशिश करेगा। और इसीलिए यह भ्रामक है। लेकिन यही तो पाप है।

यह हमें माफ़ नहीं करता, लेकिन मुझे लगता है कि यह पाप के बारे में कुछ बताता है। और यही उसके साथ हुआ। उसने इसे अच्छा दिखाया।

खैर, यहाँ परिणाम क्या है? एक परिणाम है जिसके बारे में मुझे लगता है कि उन्होंने किसी भी तरह से अनुमान नहीं लगाया था। और वह यह है कि महिला ने सर्प के टोरा को स्वीकार कर लिया। आइए समझते हैं कि वास्तव में यहाँ क्या हो रहा है।

वह कुछ करने को कह रहा है। वह इसके लिए कारण बता रहा है। और वह ऐसा करती है।

आदमी उसकी टोरा का पालन करता है। वह अपनी पत्नी की आवाज़ पर ध्यान देता है। वह वही करता है जो वह करने को कहती है।

यही कारण है कि परमेश्वर ने उसे फटकार लगाई। और इसलिए स्त्री सर्प को अपने अधिपति के रूप में मान रही है। वह प्रभु द्वारा कही गई बातों के स्थान पर उसके टोरा, उसके कानून, उसकी सलाह को लागू कर रही है।

और आदम भी यही कर रहा है। वह अपनी पत्नी की बात मान रहा है, जो हमें बताया गया है। और संयोग से, यह तथ्य कि प्रभु कहते हैं, तुमने अपनी पत्नी की बात पर ध्यान दिया, इससे, कम से कम मेरे लिए, यह पता चलता है कि जब यह हुआ, जब साँप ने उसे बहकाया, तब आदम वहाँ मौजूद नहीं था, क्योंकि उसने अपनी पत्नी से इसके बारे में सुना था।

और उसने वही किया जो उसने करने को कहा था। और इसलिए, दोनों मामलों में, और यह हिब्रू मुहावरा, आवाज़ पर ध्यान देना, हिब्रू में, कुछ ऐसा है जो बहुत बाद में सामने आता है, और यह स्पष्ट हो जाता है कि यह एक वाचा प्रकार का मुहावरा है। जब आप किसी की आवाज़ पर ध्यान देते हैं, तो आप उन्हें अपने ऊपर अधिकार के रूप में मानते हैं।

वाचा की शर्तों के अनुसार, यह प्रभु है, और इस्राएल को उसकी आवाज़ पर ध्यान देना चाहिए। खैर, इस मामले में, आदम ने अपनी पत्नी की आवाज़ पर ध्यान दिया। वह उसके साथ ऐसा व्यवहार करता है मानो वह उसकी विधि निर्माता हो।

इस मुहावरे का इस्तेमाल महिला के संदर्भ में नहीं किया गया है, लेकिन वह स्पष्ट रूप से वही काम करती है। इसलिए, वे दोनों प्रभावी रूप से ऐसा करते हैं। वे दोनों प्रभावी रूप से साँप की सलाह का पालन करते हैं।

वह सीधे, और उसके माध्यम से वह। वह उसके माध्यम से आदम है। ऐसा करके, वे प्रभावी रूप से सर्प को एक वैकल्पिक अधिपति के रूप में ले रहे हैं।

वे भगवान के टोरा का नहीं, बल्कि उनके टोरा का अनुसरण कर रहे हैं। वे भगवान के टोरा को अस्वीकार कर रहे हैं। वे फल खाने से परहेज नहीं कर रहे हैं।

वे इसे ले जा रहे हैं। और इससे क्या होता है? इससे उसका, और मैं कहूँगा उसके स्वर्गदूतों का, दुनिया में परिचय होता है। और इसीलिए वह, एक छोटे से अक्षर के साथ, इस दुनिया का अधिपति बन जाता है।

या जैसा कि पॉल ने 2 कुरिन्थियों में कहा है, वह छोटे अक्षर वाले इस संसार का परमेश्वर बन जाता है। बेशक, परमेश्वर अभी भी बड़े अक्षर S का अधिपति है। वह अभी भी संसार पर बड़े अक्षर G का परमेश्वर है। लेकिन उसने ऐसा होने दिया है।

और यह उनके अपराध का कानूनी परिणाम है। और इसलिए हम सभी इसी स्थिति में फंसे हुए हैं क्योंकि उन्होंने जो किया है। और फिर भी, बेशक, हम सभी ने पाप किया है और प्रभु की महिमा से वंचित रह गए हैं।

इसलिए, हमारे पास कोई बहाना नहीं है। लेकिन इसकी पृष्ठभूमि यही है। यही कारण है कि यह हुआ।

और अपनी बुद्धि से, परमेश्वर ऐसा होने देता है और लंबे समय तक चलता रहता है जब तक कि प्रभु अंततः वापस नहीं आ जाता और यह सब समाप्त नहीं कर देता। खैर, मनुष्यों की पापपूर्णता, क्योंकि यद्यपि हम उस स्थिति में हैं और यद्यपि हम इस दुनिया के छोटे भगवान के अधीन हैं, दुनिया में हर कोई है, चाहे वे भगवान या शैतान में विश्वास करते हों या नहीं, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। और, बेशक, मसीह में, अब हम अपने परमेश्वर और अपने अधिपति के लिए प्रभावी ढंग से जीने में सक्षम हैं।

और इसलिए यह इस तथ्य को नहीं बदलता है कि शैतान, शैतान, अभी भी ईश्वर के अधीन और उसकी अनुमति से पूरी दुनिया पर छोटा ईश्वर है। इसके परिणाम हैं। इसलिए हम अभी भी उन आदेशों का पालन करने जा रहे हैं।

हम स्पष्ट रूप से अभी भी फलदायी हैं और बढ़ रहे हैं। दुनिया की आबादी हमेशा बढ़ रही है। हम पृथ्वी पर राज कर रहे हैं।

हम स्पष्ट रूप से चीजों को अपने अधीन कर रहे हैं, और पापपूर्ण तरीके से, जिससे हम ग्रह को नुकसान पहुंचा रहे हैं, यहाँ तक कि इसे नष्ट भी कर रहे हैं। जब जॉन ने प्रकाशितवाक्य 11, 18 लिखा, तो पृथ्वी को नष्ट करने वालों को नष्ट करने का समय आ गया। मुझे लगता है कि यह कठिन होता।

जॉन के दिनों में किसी के लिए यह कहना मुश्किल होता कि मनुष्य पृथ्वी को नष्ट कर रहे हैं। लेकिन अब हम जानते हैं कि यह एक वास्तविक संभावना है। इसका पूर्वाभास यशायाह 24 में भी दिया गया था, जो एक युगांतशास्त्रीय कविता है जहाँ हम पढ़ते हैं कि पृथ्वी अपने निवासियों के कारण प्रदूषित है।

इसलिए, मनुष्य कभी-कभी सांस्कृतिक आदेश, शासन और वशीकरण कहलाने वाले काम को जारी रखते हैं, लेकिन पापपूर्ण तरीके से, आत्मा के साथ तालमेल बिठाने में विफल रहते हैं और पृथ्वी को नष्ट कर देते हैं। खैर, इस स्थिति पर परमेश्वर की प्रतिक्रिया क्या है? वह आता है, और वह न्याय से शुरू करता है। संयोग से, हमने वाचा मध्यस्थ भविष्यद्वक्ताओं और वाचा मुकदमा भविष्यद्वक्ताओं के बारे में बात की है।

हमने तर्क दिया है कि आदम एक वाचा मुकदमा वाचा मध्यस्थ भविष्यद्वक्ता है। वह इस आदमिक वाचा की मध्यस्थता करता है। मूसा की वाचा के तहत, वाचा मुकदमा भविष्यद्वक्ता थे।

हम जिन लोगों के बारे में सोचते हैं वे यिर्मयाह, यशायाह, यहजेकेल, माइकल और छोटे भविष्यद्वक्ता हैं। इसके अलावा, ऐसे लोग भी हैं जिन्होंने नहीं लिखा, जैसे मीकायाह, एलिय्याह और एलीशा। इस स्थिति में, एक वाचा टूट गई है, और एक मुकदमा लाया जाना चाहिए।

लेकिन आस-पास केवल वे ही मनुष्य हैं जो वाचा को तोड़ चुके हैं। वास्तव में, उनमें से एक, हम कहें तो, आदम, वाचा का मध्यस्थ था। इसलिए, यदि वाचा का मुकदमा लाया जाना है, तो प्रभु को इसे लाना होगा।

और उसे यह लाना ही होगा। वह अपने प्रति सच्चा होगा। और इसलिए, वह ऐसा करता है।

और इसलिए, यदि आप चाहें तो प्रभु स्वयं ही पहला वाचा मुकदमा भविष्यद्वक्ता है। और मुझे संदेह है कि आपके यहाँ जो है वह पुत्र न्याय के लिए आ रहा है क्योंकि वह अंतिम समय में न्याय के लिए आएगा। और मैं यहाँ इसका उल्लेख करूँगा।

मुझे नहीं पता कि हम इस पर बाद में और चर्चा करेंगे, लेकिन मैंने इस बारे में कई जगहों पर लिखा है। उत्पत्ति 3, 8 और उसके बाद के अध्यायों में जो आम तौर पर अनुवादित किया गया है, उसमें आप पढ़ते हैं कि प्रभु दिन के ठंडे समय में आए। अब, अक्कादियन भाषा से बाइबिल के बाहर के साक्ष्यों के आधार पर, जो कि असीरिया और बेबीलोन की भाषा है, यह साबित करने के लिए एक अच्छा मामला है कि हिब्रू में योम शब्द, योम किप्पुर की तरह, प्रायश्चित का दिन है।

एक और हिब्रू शब्द है योम, जिसका अर्थ है तूफ़ान। और आप इसे वास्तव में होलाडे के हिब्रू शब्दकोश में पा सकते हैं। और इसलिए, मैंने जो अनुवाद तर्क दिया है वह तूफ़ान की हवा में होना चाहिए, न कि दिन की ठंड में।

और मुझे लगता है कि यह 2,000 साल से भी ज़्यादा समय से चली आ रही एक बहुत ही अजीबोगरीब हिब्रू अभिव्यक्ति को हल करता है। और दिन की हवा, दिन की ठंड, कुछ इस तरह की बातें, मुझे लगता है, यह अनुमान लगाने का सबसे अच्छा तरीका है कि यह क्या है। लेकिन यह उन मामलों में से एक है, मेरा मानना है, जहाँ बाइबिल से बाहर की सजातीय भाषा के साक्ष्य कुछ स्पष्ट करने में मदद करते हैं।

लेकिन इसलिए, हम रुकेंगे क्योंकि प्रभु अपने पहले तूफ़ान, ईश्वरीय दर्शन में आ रहे हैं, जो कि पतन के बाद उनके प्रकट होने का तरीका है। और लोग पतन के बाद डर जाते हैं। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था।

परमेश्वर ने पतन से पहले पुरुष और स्त्री से बात की थी। उन्हें कोई डर नहीं था। पतन के बाद वह बगीचे में प्रकट होता है।

एडम डरता है। वह इसलिए डरता था क्योंकि वह नंगा था, लेकिन जैसा कि केल्विन ने सुझाया, शायद यहाँ सिर्फ शारीरिक नग्नता से ज़्यादा कुछ चल रहा है। आध्यात्मिक डर है, जो मुझे लगता है कि सच है।

और संयोग से, यही समस्या है जो जारी है। जब भी प्रभु पुराने नियम में अपनी महिमा के कुछ रूप में प्रकट होते हैं, तो भय होता है। यीशु का अवतार, परमेश्वर के पुत्र का अवतार, उस समस्या को हल करने की दिशा में पहला कदम है क्योंकि यीशु कह सकते हैं कि जो मुझे देखता है वह पिता को देखता है।

और जब वह चमत्कार करता है तो वे उसकी महिमा देखते हैं, लेकिन वे उससे डरते नहीं हैं। फिर भी, जब वह पतमुस पर एक शानदार तरीके से यूहन्ना के सामने प्रकट होता है, तो यूहन्ना, जो मुझे लगता है कि यीशु का प्रिय शिष्य था, जो यीशु के करीब था, उसकी गोद में लेटा हुआ था और उस समय उसके अंदर पवित्र आत्मा था। फिर भी जब पुत्र अपनी महिमा में प्रकट होता है, तो वह एक मृत व्यक्ति की तरह गिर जाता है।

और मुझे लगता है कि अगर प्रभु हमारी उपस्थिति में इस तरह प्रकट होते, तो हम भी वैसा ही करते, भले ही हमारे अंदर आत्मा हो, क्योंकि यह अभी भी शरीर की पापपूर्णता है जो परमेश्वर की पवित्रता के प्रति भय में प्रतिक्रिया करती है। यह शक्ति का मामला नहीं है; यह पवित्रता का मामला है। वैसे भी, यहाँ उत्पत्ति 3 में प्रभु पहला वाचा मुकदमा ला रहे हैं, और वे अभिशाप का पहला भाग लाते हैं।

वह सबसे पहले साँप को शाप देता है। साँप ही इस सबका सूत्रधार है। वह कहता है, तुम सभी पशुओं और सभी जंगली जानवरों से अधिक शापित हो।

खैर, यह दर्शाता है कि जानवर भी अभिशाप के अधीन हैं और यह सुझाव देता है कि पूरी सृष्टि अभिशाप के अधीन है। और इसलिए, जैसा कि पॉल ने बाद में रोमियों 8 में कहा, सृष्टि निराशा के अधीन थी। सृष्टि को वह बनने से रोका गया जो वह हो सकती थी, अपनी पसंद से नहीं, बल्कि उसे अधीन करने वाले की इच्छा से, अर्थात् ईश्वर, इस आशा में कि सृष्टि स्वयं क्षय के बंधन से मुक्त हो जाएगी और ईश्वर की संतानों की शानदार स्वतंत्रता में लाई जाएगी, जो निश्चित रूप से होने जा रही है।

खैर, शाप का दूसरा भाग यह है कि सर्प अपने पेट के बल रेंगता रहेगा और अपने जीवन के सभी दिनों में धूल खाता रहेगा। सर्प की आकृति एक रहस्य बनी हुई है। बाद में प्रकाशितवाक्य 12:9 में, उसे उस प्राचीन सर्प के रूप में संदर्भित किया गया है जिसे शैतान और शैतान, एक बड़ा अजगर कहा जाता है।

तो, किसी तरह, यह साँप शैतान है, चाहे उसने साँप को अपने कब्जे में लेकर उसका इस्तेमाल किया हो या नहीं, कौन जानता है, यह एक रहस्य है। लेकिन, शारीरिक रूप से, साँपों का ज़मीन पर रेंगना साँप पर न्याय के प्रतीक के रूप में लिया जाता है। मिल्टन ने साँप को अपनी पूंछ पर संतुलन बनाने, कुंडली बनाकर और महिला से बात करने में सक्षम के रूप में चित्रित किया है।

बहुत ही चतुराई से, वह सुझाव देता है कि यह तथ्य कि साँप बोल सकता है, महिला को सोचने पर मजबूर करता है क्योंकि साँप कहता है, अरे, तुम जानते हो, मैंने वह फल खाया, और देखो, अब मैं बात कर सकता हूँ। तो, महिला सोचती है, वाह, अगर यह साँप के लिए ऐसा कर सकता

है, तो यह मेरे लिए क्या करने जा रहा है? तो, बहुत ही चतुराई भरी बात है। हम यह सब नहीं जान सकते, बेशक, लेकिन यह उनकी कविता है, और उन्हें ऐसा करने का पूरा अधिकार था, और यह पढ़ने में बहुत बढ़िया है, चाहे यह वास्तव में जिस तरह से हुआ हो या नहीं।

और इसलिए, लेकिन यह सर्प पर अभिशाप है। खैर, अभिशाप का तीसरा भाग, हालांकि, जिसे प्रोटेवेंजेलियम कहा जाता है, सुसमाचार का पहला कथन है। मैं तुम्हारे और स्त्री के बीच और तुम्हारी संतान और उसकी संतान के बीच दुश्मनी पैदा करने जा रहा हूँ।

वह तुम्हारा सिर कुचल देगा। तुम उसकी एड़ी पर वार करोगे। और हम वहाँ इस्तेमाल की गई क्रियाओं के बारे में बात करेंगे।

मैं अभी इसका उल्लेख करूँगा क्योंकि यहां कुचलना और प्रहार करना का अनुवाद आपको लगेगा कि दो अलग-अलग क्रियाओं का उपयोग किया गया है, लेकिन यह वास्तव में हिब्रू में एक ही क्रिया है, और इसलिए यह वास्तव में इंगित करता है कि दोनों मामलों में, वे एक तरह के प्राणघातक प्रहार होने जा रहे हैं और बेटा वास्तव में मर जाता है। वह अपना जीवन त्याग देता है, लेकिन, निश्चित रूप से, उसके पास इसे फिर से लेने का अधिकार है। लेकिन यह सब कुछ पूर्वाभास करा रहा है।

और इसलिए, इब्रानियों 2:14 में भी इस जीत का संकेत मिलता है। चूँकि बच्चों में मांस और खून है, इसलिए उसने भी उनकी मानवता में हिस्सा लिया, यानी यीशु ताकि अपनी मृत्यु से वह उसे नष्ट कर सके जिसके पास मृत्यु की शक्ति है, यानी शैतान। मुझे लगता है कि यह विचार, यह संघर्ष और बेटे की यह सर्वोच्चता भजन 110 में इस तरह से दिखाई देती है कि मुझे नहीं पता कि किसी ने इसे चित्रित करने की कोशिश की है, लेकिन मैंने इसके बारे में खंड एक में भी लिखा है।

यह भजन, जिसे लंबे समय से एक मसीहाई भजन के रूप में समझा जाता रहा है, यहाँ पुत्र, प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा, मैं राष्ट्रों को आपके पैरों के नीचे एक पांव की चौकी के रूप में रखूँगा, आपने पढ़ा कि वह राष्ट्रों का न्याय करेगा, मृतकों को ढेर करेगा, और पुत्र और फिर यहाँ फिर से, एनआईवी, यह इसके लिए एक सामान्य प्रकार का अनुवाद है, पूरी पृथ्वी के शासकों को कुचलना, ठीक है, पंक्ति वास्तव में हिब्रू में पढ़ती है, वह महान पृथ्वी पर सिर को कुचल देगा। खैर, धरती पर जो सिर कुचला जाने वाला है, वह इस दुनिया का ईश्वर है, 2 कुरिन्थियों 4:4 के अनुसार ईश्वर, जो शैतान है, शैतान है, और मसीहा वास्तव में उसका सिर कुचलने जा रहा है, और कुचलने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली क्रिया हिब्रू में माचत्ज़ है, उत्पत्ति 3 में इस्तेमाल की गई क्रिया शूफ़ है, वे एक ही चीज़ के बराबर हैं, तथ्य यह है कि क्रियाएँ अलग हैं, आपको पता होना चाहिए, इस तर्क में कोई फर्क नहीं पड़ता है, क्योंकि प्राचीन निकट पूर्वी स्टॉक वाक्यांश में, कभी-कभी अलग-अलग क्रियाओं का उपयोग किया जा सकता है, लेकिन आप महसूस करते हैं कि वाक्यांश आपको एक ही मूल बात बता रहा है, और मुझे लगता है कि यहाँ यही हो रहा है। तो, भजन 110 वास्तव में मसीहाई है, और यह अंत की ओर कुछ व्यक्त करता है जो मुझे नहीं लगता कि वास्तव में पहचाना गया है, लेकिन यह महिला के बीज की जीत और इस भविष्यवाणी की पूर्ति की भविष्यवाणी कर रहा है।

खैर, पुरुष और स्त्री पर शापों के बारे में क्या? क्योंकि यहाँ भी कुछ चीजें हो रही हैं; यह सिर्फ साँप की बात नहीं है। खैर, महिला को प्रसव पीड़ा में वृद्धि होगी। अब, हम जानते हैं कि यह मज़ेदार नहीं है; हम जानते हैं कि, वास्तव में, प्रसव कभी-कभी माँ की मृत्यु का कारण बन सकता है, लेकिन इसके बारे में अच्छी बात यह है कि प्रसव होगा, इसलिए यह तुरंत संकेत दे रहा है कि यद्यपि प्रभु उनके द्वारा किए गए कार्यों के लिए उन पर न्याय ला रहे हैं, वह उस दिन उन्हें मृत्युदंड नहीं दे रहे हैं, वह उनका अंत नहीं कर रहे हैं, जो संयोग से इन शुरुआती अध्यायों के संदर्भ में यह स्पष्ट करता है कि दिन का मतलब 24 घंटे नहीं है।

जिस दिन तुम ऐसा करोगे, तुम मर जाओगे; प्रभु ने उससे पीछे हटने या उस पर समझौता करने से इनकार नहीं किया, एक दिन का अर्थ है एक विस्तारित अवधि जैसा कि हम जानते हैं। मेरा मतलब है, सृष्टि के विवरण का सारांश भी कहता है कि यह इन चीजों का विवरण है जिस दिन प्रभु ने उन्हें बनाया था, और आपके पास पहले से ही छह दिन हैं, इसलिए दिन का उपयोग अलग-अलग तरीकों से किया जा सकता है, लेकिन प्रभु दर्दनाक प्रसव पीड़ा के साथ होगा, और यह एक और अभिशाप है, हाँ, यह एक और अभिशाप है जिसे हम उत्पत्ति 3:16 में पढ़ते हैं कि तुम्हारी इच्छा तुम्हारे पति के लिए होगी, लेकिन वह तुम पर शासन करेगा। इच्छा शब्द उत्पत्ति 4 और श्रेष्ठ गीतों के अध्याय 7 में दिखाई देता है। उत्पत्ति 3 में महिला की इच्छा उसके पति के लिए होगी।

उत्पत्ति 4 में, पाप की इच्छा कैन के लिए है। सुलैमान के गीत में, प्रेमी की इच्छा, इस मामले में पुरुष की इच्छा उसकी प्रेमिका के लिए है। मुझे लगता है कि इस शब्द के स्वाद की सबसे अच्छी समझ अंतरंगता की इच्छा है, और इसलिए हमें यहाँ क्या बताया जा रहा है? खैर, महिला अपने पति के साथ अंतरंगता चाहेगी, और मुझे लगता है कि चूंकि हम एक पतित स्थिति में हैं, इसलिए हम समझ सकते हैं कि इसके बारे में कुछ असामान्यता होने वाली है।

महिला शायद अधिक अंतरंगता चाहेगी या इसे स्वस्थ और संतुलित से अधिक शक्तिशाली रूप से चाहेगी, और इसका दूसरा पहलू यह है कि पति उस पर शासन करने जा रहा है। जिस तरह से मैं इसका अनुवाद करना चाहूँगा वह है उस पर प्रभुत्व करना क्योंकि यह फिर से, चीज़ की असंतुलित प्रकृति को अधिक व्यक्त करेगा। इसका यह मतलब नहीं है कि वह पतन से पहले उसका मुखिया नहीं था।

चाहे वह था या नहीं, आप इससे वहाँ नहीं पहुँच सकते, लेकिन किसी तरह, यहाँ उस पर एक नियम लागू होने जा रहा है, जो शायद नियंत्रणकारी भी हो। यह अत्यधिक होने जा रहा है। मेरी पत्नी मैगी ने मुझे यह अभिव्यक्ति बताई।

मुझे नहीं पता कि उसे यह बात सालों पहले कहाँ से मिली, लेकिन उसने कहा कि महिलाएँ अतृप्त होती हैं और पुरुष मूर्ख, जो कि बिलकुल एक जैसा नहीं है, लेकिन यह वहाँ पहुँच रहा है। इसलिए, रिश्ते में ऐसे गुण होंगे जो शायद पहले भी रहे होंगे, लेकिन बहुत ज़्यादा। यह स्वस्थ नहीं होने वाला है।

स्त्री पर शासन करने के लिए क्रिया हिब्रू क्रिया मशाल है। इसका प्रयोग शाही शासन के लिए किया जाता है। इसका प्रयोग उत्पत्ति 1 में दिन और रात पर शासन करने वाली ज्योतियों के लिए किया गया है।

उत्पत्ति 4 में कैन के पाप पर शासन करने के दायित्व के बारे में बताया गया है। जानवरों पर शासन करने वाले पुरुष और महिला के लिए अलग-अलग क्रिया का उपयोग किया जाता है, लेकिन वे दोनों शाही शासन के लिए उपयोग किए जाते हैं, इसलिए मुझे नहीं लगता कि वहाँ मौखिक अंतर बहुत मायने रखता है, और यह वास्तव में उस बारे में प्रासंगिक नहीं है जिसके बारे में हम बात कर रहे हैं। और इसलिए, ऐसा लगता है कि हम अन्य उपयोगों, बाद के उपयोगों से, यह अनुमान लगा सकते हैं कि जबकि आदम शाही तरीके से उस पर शासन करने जा रहा है और नियंत्रित कर सकता है, और जैसा कि हमने कहा, यह पहले के समान अधिकार के नुकसान पर लागू नहीं होता है, वह पहले उसका मुखिया हो सकता है, इफिसियों 5 के शब्द का उपयोग करने के लिए, और फिर भी उसे नियंत्रित नहीं कर सकता है।

लेकिन फिर से, यह प्रारंभिक सामग्री यह सब बहुत ही अस्पष्ट छोड़ती है, और इसलिए मुझे नहीं लगता कि आप यहाँ इस्तेमाल की गई शब्दावली के आधार पर वैवाहिक संबंध की प्रकृति के बारे में तर्क देना चाहते हैं। हम समझते हैं कि मसीह में और हमारे अंदर आत्मा के वास करने से, यह पतन के बाद और आत्मा दिए जाने से पहले की तुलना में बेहतर होना चाहिए। खैर, ज़मीन पर एक अभिशाप भी है जो जैसा कि हम यहाँ पढ़ते हैं वैसा ही होने वाला है।

तो, ज़मीन शापित है, जिसके साथ आदम को दुनिया पर शासन करने के लिए काम करना था, और उसकी पत्नी को भी ऐसा करना था। अब यह प्रतिरोध, दर्दनाक परिश्रम, काँटे और ऊँटकटारे पैदा करने जा रहा है, और फिर आदम खुद ज़मीन पर वापस लौट जाएगा, वह धूल जहाँ से उसे निकाला गया था। तो, अगर हम देखें कि इन शापों के साथ क्या हो रहा है, तो मुझे लगता है कि यह दिखाने का एक अच्छा तरीका होगा कि क्या हो रहा है।

प्रयास के क्षेत्र पर एक निर्णय है, और प्राप्त या निहित अधिकार में कमी है। इसलिए, साँप के लिए प्रयास का क्षेत्र खेत है। वह क्षेत्र के सभी जानवरों में सबसे चतुर है।

वह अपने पेट के बल रेंगता है। प्राप्त या निहित अधिकार में कमी, मैं कहता हूँ कि प्राप्त किया गया क्योंकि और उसके मामले में लागू किया गया क्योंकि उसने वास्तव में अभी खुद को छोटे जी के साथ इस दुनिया का भगवान नहीं बनाया है। उसका सिर कुचला जा रहा है। महिलाओं के प्रयासों में से एक, कम से कम, गर्भावस्था है, जिसे समझौता किया जा रहा है और मुश्किल बनाया जा रहा है।

मनुष्य, वह कथित तौर पर पृथ्वी और भूमि आदि पर शासन कर रहा है, लेकिन अब यह प्रतिरोध उत्पन्न करने जा रहा है। इसलिए प्रत्येक मामले में परमेश्वर का दृष्टिकोण व्यक्ति के अपने विशिष्ट या प्रमुख क्षेत्र में निरर्थकता या निराशा उत्पन्न करना है और फिर प्रत्येक के लिए अधिकार में उलटफेर या अधिकार में कमी की घोषणा करना है। पुराने नियम में बाद में इस तरह का अभिशाप अज्ञात नहीं है।

गॉर्डन कॉनवेल में मेरे सहकर्मी डॉ. स्टुअर्ट ने इसे व्यर्थता का अभिशाप कहा है। उन्होंने अपनी एक्सोडस टिप्पणी में इस बारे में काफी कुछ लिखा है, जिसे मैं अत्यधिक अनुशंसा करूँगा यदि आप एक्सोडस पर एक अच्छी टिप्पणी की तलाश में हैं। बहुत विस्तृत।

आप पर शाप, भ्रम, फटकार और वह सब कुछ भेजेगा जो आप अपना हाथ लगाएँगे जब तक कि आप नष्ट नहीं हो जाते और अचानक बर्बाद नहीं हो जाते क्योंकि आपने उसे त्याग कर जो बुराई की है। आप जो कुछ भी करेंगे उसमें आप असफल होंगे।

दिन-ब-दिन, तुम पर अत्याचार होगा और तुम्हें लूटा जाएगा और तुम्हें बचाने वाला कोई नहीं होगा। यहाँ स्पष्ट रूप से व्यर्थता है। और थोड़ी देर बाद व्यवस्थाविवरण में, वास्तव में सिर्फ एक श्लोक के बाद, यह बहुत स्पष्ट रूप से व्यक्त किया गया है।

तुम एक स्त्री से विवाह करने के लिए वचनबद्ध होगे, परन्तु कोई दूसरा उसे ले जाएगा और उसका शोषण करेगा। तुम एक घर बनाओगे, परन्तु तुम उसमें नहीं रहोगे। तुम एक अंगूर का बाग लगाओगे, परन्तु तुम उसके फल का आनन्द भी नहीं उठा पाओगे।

और उन उदाहरणों के विरुद्ध, उत्पत्ति 3 स्पष्ट हो जाता है। आपकी इच्छा आपके पति के लिए होगी, लेकिन वह आप पर प्रभुता करेगा। इसलिए यह एक व्यर्थ अभिशाप है।

रिश्ते में वह निरर्थकता होगी, जो निश्चित रूप से कभी नहीं होनी चाहिए थी। खैर, अगर हम पतन के बाद आदमिक वाचा के तहत जीवन को आगे देखें, कैन और गैर-चुने हुए वंश, इस पर क्लासिक सोच, जो निश्चित रूप से जिस तरह से इसे स्थापित किया गया है, वह यह है कि आपके पास चुने हुए अच्छे लोगों की एक पंक्ति है, जो एडम, सेठ और उनके वंशजों और फिर कैन और उसके वंशजों के माध्यम से सेठ के वंशज हैं और इसलिए यह दिलचस्प है कि यह कैनाइट लाइन से है कि हम शहरों और प्रौद्योगिकी के विकास के बारे में पढ़ते हैं।

तो, कैन पहला व्यक्ति था जिसने शहर बसाया। कैन का बेटा जबल तंबुओं में रहता था और पशुपालन करता था, इसलिए जाहिर है कि यह पशुपालन की शुरुआत थी। उसका भाई जुबल वाद्य यंत्रों के साथ संगीत की शुरुआत था।

ट्यूबल कैन, उनके सौतेले भाई, कांस्य और लोहे के औजार बनाते हैं। और इसलिए, होमो फेबर फिर से एक छोटा लैटिन आदमी निर्माता है। दिलचस्प बात यह है कि यह गिरती हुई रेखा है जो इन चीजों के साथ आई है।

मेरा अनुमान है कि इसके पीछे कोई कारण है। शहर के लिए हिब्रू शब्द एक मूल शब्द से आया है जिसका अर्थ है सतर्क रहना। अरामी भाषा में इसका समानार्थी शब्द बहुवचन में स्वर्गदूतों के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

उन्हें सजग लोग कहा जाता है। वे सोते नहीं हैं। वे हमेशा सजग रहते हैं।

मुझे लगता है कि शहर का मतलब है कि लोग निगरानी करते हैं। यानी, आपके पास दीवारें हैं और आपके पास पहरेदार हैं। उन दिनों शहर सुरक्षा के लिए बनाए जाते थे।

वह कहावत क्या है? कैन एक शहर बनाता है। वह असुरक्षित महसूस करता है। हम जानते हैं कि वह असुरक्षित महसूस करता है।

वह कहता है, हे प्रभु, तुम मुझे यहाँ से भगा रहे हो। जो कोई मुझे पा लेगा, वह मुझे मार डालेगा। प्रभु कहते हैं, नहीं, मैं इसका ध्यान रखूँगा।

वह असुरक्षित महसूस करता है। वह एक शहर बनाता है। उसके बच्चों ने ये तकनीकें विकसित की हैं।

ऐसा लगता है कि लोग कह रहे हैं कि हम खुद की सुरक्षा और देखभाल करने के तरीके खोजने जा रहे हैं। हम ऐसी चीजों का आविष्कार करने जा रहे हैं जो जीवन को रोचक और मनोरंजक बना दें वगैरह। ये सभी चीजें आम कृपा के तहत पैदा होती हैं।

भगवान की मदद के बिना ये सब संभव नहीं हो सकता। इसका मतलब यह नहीं है कि अगर आपके पास आईफोन है तो आप शैतान के पास जा रहे हैं। हम तकनीक बनाने के लिए बने हैं।

भगवान ऐसा करने में सक्षम बनाते हैं। ऐसा लगता है कि यह असुरक्षा की भावना से उत्पन्न हुआ है। जोखिम यह है कि हम खुद ही शक्तियाँ और क्षमताएँ विकसित कर लेते हैं और हमें लगता है कि हमें भगवान की ज़रूरत नहीं है।

हमारी संस्कृति में यही होता आया है। यहाँ आने के शुरुआती दिनों में यही होता आया है। इसमें बहुत अहंकार भी शामिल है।

हम इसे लेमेक में देखते हैं। वह दो महिलाओं से शादी करने वाला पहला व्यक्ति है। यदि आप लेमेक के गीत को पढ़ते हैं, जैसा कि इसे कहा जाता है, तो मैं इसके बारे में बहुत अधिक नहीं बताने जा रहा हूँ, लेकिन ऐसे तरीके हैं जिनसे वह गीत हिब्रू काव्य परंपराओं का उल्लंघन करता है, जो यह सुझाव देने का एक तरीका है कि मेरा मानना है कि काव्यात्मक रूप से लेमेक स्वयं एक नियम तोड़ने वाला व्यक्ति है।

ऐसा लगता है कि उसने एक से ज़्यादा पत्नियाँ रखी थीं। इस कविता में उसने यह भी कहा है कि भगवान ने वादा किया था कि अगर कैन को मार दिया गया तो उसका बदला सात बार लिया जाएगा, लेकिन अगर मुझे किसी ने चोट भी पहुँचाई, चाहे वह लड़का ही क्यों न हो, तो मैं खुद का बदला 77 बार लूँगा। भगवान ने सात बार ऐसा कहा था।

लेमेक कह रहा है कि भगवान ने यही कहा है। मैं इससे भी बुरा करूँगा। बहुत ही भयानक।

यदि आप कभी उस अंश पर प्रचार कर रहे हैं, या यदि आप कभी मत्ती 18:21, 22 में इस अंश पर प्रचार कर रहे हैं, तो दोनों को जोड़ना अच्छा होगा। मत्ती के अंश में, पतरस यीशु के पास

आता है और कहता है, अच्छा, यदि कोई भाई मेरे विरुद्ध पाप करता है, तो मुझे उसे कितनी बार क्षमा करना चाहिए? सात बार, जो सात प्रतीत होता है, पूर्णता की संख्या है, है ना? सृष्टि में सात दिन, और इसी तरह। सब्त् सातवाँ दिन है, और इसी तरह।

यीशु कहते हैं, नहीं, नहीं, 77 बार। यह कैन की ओर स्पष्ट संकेत है। जबकि कैन की आत्मा, ईश्वर-विरोधी, यह है कि मेरा बदला 77 बार लिया जाएगा।

मसीह की आत्मा कहती है कि तुम 77 बार क्षमा करो। यह एक स्पष्ट संकेत है, और यह एक अच्छा उदाहरण है। लेकिन वैसे भी, कैन की वंशावली के तहत जीवन ऐसा ही है, और चीजें बदतर हो जाती हैं।

इसलिए पाप बढ़ता है, और हम उत्पत्ति 6 में पढ़ते हैं, जब पृथ्वी पर मनुष्य संख्या में बढ़ने लगे, और उनकी बेटियाँ पैदा हुईं, परमेश्वर के पुत्रों ने देखा कि मनुष्य की बेटियाँ सुंदर थीं, जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया था, शब्द टोव है, अच्छा, और उन्होंने विवाह किया, जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया था, शब्द लिया गया है, और इसे बाद में दीना के बलात्कार के लिए इस्तेमाल किया गया है, इसलिए इसका मतलब विवाह नहीं है, लेकिन उन्होंने उन्हें ले लिया, जो भी उन्होंने चुना, तब प्रभु ने कहा, मेरी आत्मा नहीं रहेगी, जिस तरह से हम अनुवाद करने जा रहे हैं, वह है, मेरी आत्मा हमेशा के लिए मनुष्य के साथ नहीं रहेगी, कहने का मतलब है, मेरी आत्मा हमेशा के लिए एक इंसान के जीवन को बनाए रखना जारी नहीं रखेगी, उसके दिन अब 120 साल होंगे। और मुझे लगता है कि हम इसे खेलते हुए देखते हैं; कभी-कभी आप किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में सुनेंगे जो 140 साल तक जीवित रहा है; यह बहुत दुर्लभ बात है, लेकिन 120 काफी ऊपरी सीमा है। उन दिनों में पृथ्वी पर नेफिलिम लोग रहते थे, और उसके बाद भी जब परमेश्वर के पुत्र मनुष्यों की पुत्रियों के पास गए और उनसे सन्तान उत्पन्न की, तो वे प्राचीन काल के वीर और यशस्वी पुरुष थे।

इस अंश में कई बातें हैं, लेकिन हम इन आयतों को पढ़कर समाप्त करेंगे। प्रभु ने देखा कि पृथ्वी पर महान लोगों की दुष्टता कितनी बढ़ गई थी; उनके हृदय के विचारों की हर प्रवृत्ति हर समय केवल बुराई ही थी, और इसलिए प्रभु को दुख हुआ कि उन्होंने पृथ्वी पर मनुष्यों को बनाया था, और उनका हृदय पीड़ा से भर गया। मैं यह टिप्पणी करूँगा: आइए हम यह न सोचें कि, ठीक है, यहाँ प्रभु अचानक आश्चर्यचकित हो गए, और उन्होंने कहा, क्या? वे इतने बुरे हो गए हैं? मुझे बहुत खेद है कि मैंने उन्हें बनाया भी।

मुझे लगता है कि हम अपने स्वभाव में, अपने अस्तित्व में जानते हैं कि हम कुछ कर सकते हैं। हम यह भी जान सकते हैं कि इसके कुछ बुरे परिणाम होने वाले हैं, लेकिन फिर भी ऐसा करना सही है, और हम इस बात से दुखी हो सकते हैं कि हमने बुरे परिणामों के कारण ऐसा किया, और हमें बुरे परिणामों को दूर करने के लिए कुछ करना भी पड़ सकता है, लेकिन हम इतने जटिल हैं कि ऐसा हो सकता है, और मुझे लगता है कि यह निश्चित रूप से ईश्वर के लिए भी सच है। उसके पास भावनाएँ हैं, लेकिन वह कुल मिलाकर जानता है कि वह क्या कर रहा है, और वह चीजों को उस तरह से बदल देगा जैसा वह चाहता है, इसलिए वह यह निर्णय लाता है।

मैं यह निर्णय लाने जा रहा हूँ। मैं उन्हें मिटाने जा रहा हूँ। खैर, यहाँ शर्तों के बारे में क्या? ऐसी शर्तें हैं जो पूरी तरह से स्पष्ट नहीं हैं; मुझे लगता है कि उनमें से कुछ काफी स्पष्ट हैं, लेकिन वे पूरी तरह से स्पष्ट नहीं हैं, और कुछ चीजें बिल्कुल भी स्पष्ट नहीं हैं और उन्हें इस अनुच्छेद में तय नहीं किया जा सकता है।

ईश्वर के पुत्र, बेनी एलोहीम। इस पर तीन अलग-अलग दृष्टिकोण हैं। ईश्वर के पुत्र, पतित स्वर्गदूत की व्याख्या, जिस पर हम समय बिताएंगे, वह ऐतिहासिक रूप से लगभग सार्वभौमिक रूप से पुष्टि की गई है, हालांकि आधुनिक लोगों को इससे थोड़ी समस्या है।

पुराने नियम में कहीं और, इस शब्द का प्रयोग केवल स्वर्गदूतों के लिए किया गया है। बेशक, उत्पत्ति 6 एक अपवाद हो सकता है, लेकिन यह यहाँ केवल डेटा एकत्र कर रहा है। सेप्टुआजेंट, सेप्टुआजेंट, इसका अनुवाद ईश्वर के स्वर्गदूतों के रूप में करता है।

यदि आप इसे अरामी अनुवाद कहना चाहें तो तार्गम्स, अरामी अनुवाद, और अधिक जानकारी देते हैं। वह हमें उनके नाम भी बताता है। इसलिए, यहाँ तार्गम्स कभी-कभी थोड़ा कल्पनाशील हो जाता है।

ऐसा लगता है कि उत्पत्ति 6 में परमेश्वर के पुत्रों और मनुष्यों की पुत्रियों के बीच एक अंतर स्थापित किया गया है। इसलिए, उदार विद्वान वॉन रेड, फिर से, यह नहीं मानते कि ऐसा कुछ हुआ था, लेकिन उनका कहना है कि यहाँ स्पष्ट रूप से एक अंतर है। यह जानबूझकर किया गया है।

आपके पास ईश्वर के पुत्र हैं, जो स्वर्गीय प्राणी हैं, और मनुष्य की बेटियाँ हैं, जो मनुष्य हैं। और कुछ प्राचीन निकट पूर्वी सामग्रियों में समान वाक्यांश हैं। खैर, इस बारे में क्या? क्या स्वर्गदूत आकर मानव महिलाओं के साथ यौन संबंध बना सकते हैं? हम जानते हैं कि स्वर्गदूत कुछ शारीरिक कार्य कर सकते हैं।

वे उत्पत्ति 18 में पुरुषों के रूप में दिखाई देते हैं। वहाँ, आपके पास तीन पुरुष हैं जो अब्राहम के तम्बू के सामने दिखाई देते हैं। उनमें से एक, जैसा कि हम बाद में सीखते हैं, प्रभु है।

उनमें से दो स्वर्गदूत हैं जो लूत को सदोम और अमोरा के आने वाले न्याय के बारे में चेतावनी देने के लिए जाते हैं। जब वे दोनों जाते हैं, तो वे वही खाते हैं जो लूत उन्हें देता है, जैसा कि वास्तव में प्रभु और स्वर्गदूतों ने वही खाया जो अब्राहम ने उन्हें दिया था। इसलिए, वे मनुष्यों की तरह दिखते हैं।

वे भोजन खाने जैसी शारीरिक चीजें कर सकते हैं। भजन 78 में स्वर्ग से आने वाले भोजन को शक्तिशाली लोगों की रोटी के रूप में संदर्भित किया गया है, लेकिन आखिरकार यह कविता है। इसलिए मुझे यकीन नहीं है कि हम इसे बहुत ज़्यादा बनाते हैं।

यह ध्यान देने योग्य बात है कि जब सदोम और अमोरा के लोग इन लोगों को देखते हैं, जिन्हें हम जानते हैं कि वे स्वर्गदूत हैं, तो वे चाहते हैं कि शहर खाली हो जाए। सभी पुरुष, युवा और बूढ़े, सेक्स करने के लिए आते हैं। वे उन्हें जानना चाहते हैं।

वे उनके साथ यौन संबंध बनाना चाहते हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि वे ऐसा कर सकते हैं, लेकिन यह दर्शाता है कि वे पुरुषों की तरह दिखते हैं और यौन इच्छा की वस्तु प्रतीत होते हैं। 1 कुरिन्थियों 11 में रहस्यपूर्ण मार्ग है कि पुरुष को स्त्री के लिए नहीं बनाया गया था, बल्कि स्त्री को पुरुष के लिए बनाया गया था; इसलिए, स्वर्गदूतों के कारण स्त्री के सिर पर अधिकार का प्रतीक होना चाहिए।

खैर, इसका क्या मतलब है? इसका मतलब यह हो सकता है कि अगर किसी महिला के सिर पर अधिकार का प्रतीक होना चाहिए, तो आप ऐसा न करके स्वर्गदूतों को नाराज़ नहीं करना चाहते। या इसका मतलब यह हो सकता है कि अधिकार का प्रतीक यह स्पष्ट करता है कि महिलाओं को ले जाया गया है, और इसलिए स्वर्गदूत उन्हें लेने के लिए नीचे गिरने और कोशिश करने के लिए लुभाए नहीं जाते हैं। मुझे लगता है कि इसका क्या मतलब है, यह पूरी तरह से स्पष्ट नहीं है, लेकिन यह एक ऐसा मार्ग है जिसे इस संबंध में देखा जा सकता है।

नए नियम के अंश इस अर्थ में उत्पत्ति 6 का उल्लेख करते प्रतीत होते हैं। 2 पतरस में, यदि परमेश्वर ने स्वर्गदूतों को पाप करने पर नहीं बख्शा, बल्कि उन्हें नरक में भेज दिया, उन्हें न्याय के लिए अंधेरे कालकोठरी में डाल दिया, और यह एक दिलचस्प अवधारणा है। आपको याद होगा कि जब यीशु दुष्टात्माओं को इकट्ठा हुए लोगों से बाहर निकालने जा रहे थे, तो वे उनसे विनती करते हैं, हमें रसातल में मत भेजो, जो शायद यही हो।

अब, चूँकि चारों ओर बहुत सारे दुष्टात्माएँ हैं, इसलिए यीशु उन लोगों की सेवा करते हैं जिनमें दुष्टात्माएँ हैं। पौलुस ने 1 तीमुथियुस 4 में भी तीमुथियुस को चर्च में दुष्टात्माओं के सिद्धांत के विरुद्ध चेतावनी दी है। 1 कुरिन्थियों 10:20 में, वह कहता है कि मूर्तिपूजक दुष्टात्माओं को अपने बलिदान चढ़ाते हैं, इसलिए दुष्टात्माएँ चारों ओर हैं, इसलिए सभी दुष्टात्माओं को रसातल या उदास कालकोठरी या अन्य किसी स्थान पर नहीं डाला गया।

तो, ऐसा लगता है कि यह गिरे हुए स्वर्गदूतों के कुछ समूह के बारे में बात कर रहा है जिन्होंने कुछ बहुत ही गंभीर काम किया होगा और उन्हें अनंत न्याय के लिए इन बंदीगृहों में डाल दिया गया होगा, और ऐसा लगता है कि यीशु ने सूअरों से जिन राक्षसों को बाहर निकाला था, वे नहीं चाहते थे कि उनके साथ ऐसा हो, और इसलिए उन्होंने यीशु से कहा कि उन्हें रसातल में न भेजें। तो, यह दिलचस्प है, और वह उन्हें सूअरों में भेजता है, और फिर क्या? वे सूअरों को मार देते हैं। खैर, उसके बाद वे कहाँ जाते हैं? शायद उनकी सोच यह है कि हम सूअरों को मार देंगे, फिर हम बाहर निकल जाएँगे, और हम दूसरे लोगों को परेशान करने के लिए स्वतंत्र हैं।

हो सकता है कि यीशु ने उन्हें रसातल में भेज दिया हो। कौन जानता है? लेकिन यह एक दिलचस्प संभावित संबंध है। लेकिन वैसे भी, जब वह बाढ़ लेकर आया तो उसने प्राचीन दुनिया को नहीं बख्शा, और उसने सदोम और अमोरा के शहरों को जलाकर राख कर दिया, और उसने लूट को बचाया और इसी तरह। तो आपके पास यहाँ घटनाओं का एक क्रम है, बाढ़ और फिर सदोम और अमोरा, जो हमें यह समझने में मदद कर सकता है कि ये स्वर्गदूत कौन हैं।

मुझे लगता है कि यहूदा में यह और भी स्पष्ट हो जाता है, जहाँ हम पढ़ते हैं कि जिन स्वर्गदूतों ने अपने अधिकार के पदों को नहीं रखा बल्कि अपने घर को छोड़ दिया, उन्हें उसने अंधकार में रखा है, महान दिन के न्याय के लिए अनन्त जंजीरों से बाँध दिया है। तो यहूदा का वह तरीका प्रतीत होता है जो हम 2 पतरस में पढ़ते हैं। उसने उन्हें न्याय के लिए अंधेरे कालकोठरी में भेज दिया।

ठीक है, तो परमेश्वर ने ऐसा किया। उसने उन्हें अंधकार में डाल दिया, महान दिन के न्याय के लिए जंजीरों से बाँध दिया। और फिर, इसी तरह, सदोम और अमोरा और आस-पास के शहरों ने खुद को यौन अनैतिकता और विकृति के हवाले कर दिया।

अब, जैसा कि हमने कहा, ये पतित स्वर्गदूत शैतान नहीं हैं। वे सामान्य रूप से शैतान नहीं हैं क्योंकि वे अभी भी आस-पास हैं और सक्रिय हैं। लेकिन इसी तरह, ग्रीक कहता है, इन जैसे तरीके से, सदोम और गोमोरा के लोगों ने खुद को समलैंगिकता के लिए समर्पित कर दिया, अपने उचित स्थान को त्याग दिया।

और इसलिए, ये वहाँ ट्यूटोइस है, और यह एक पुल्लिंग बहुवचन है। तो, सदोम और अमोरा के लोग अपने उचित स्थान को छोड़कर, यदि आप चाहें, और उन्हें अनुचित यौन संबंधों के लिए छोड़ देते हैं, एक यौन सीमा को पार करते हैं और समलैंगिकता के लिए जाते हैं, वे इन जैसे तरीके से ऐसा कर रहे थे। खैर, ये कौन थे? विषय, वह तीसरा पुल्लिंग बहुवचन, गिरे हुए स्वर्गदूतों को संदर्भित करता है।

तो इससे यह पता चलता है कि, ठीक है, सदोम और अमोरा के पुरुषों की तरह जिन्होंने यौन सीमा का उल्लंघन किया और समलैंगिक इच्छा में चले गए, उनकी तरह, इन पतित स्वर्गदूतों ने भी सीमा का उल्लंघन किया और मानव महिलाओं की इच्छा में चले गए। और दोनों ही यौन रूप से संबंधित पाप हैं - बहुत ही दिलचस्प अंश।

यह उन मामलों में से एक है जहाँ मूल भाषा को जानना और उसके साथ काम करना आपको इससे बचने में मदद करता है और आपको उन चीजों को देखने में मदद करता है जो अनुवाद में ज़रूरी नहीं होती हैं। और फिर यह कहने के बाद, मुझे यह कहना होगा कि हमारे अनुवाद वास्तव में काफी अच्छे हैं, और वह सब कुछ जो जानना वास्तव में ज़रूरी है, आप जानते हैं। चाहे आप इस व्यवसाय को समझें, आप जानते हैं, दो खिलौनों के पूर्ववर्ती के बारे में या नहीं, आप बच सकते हैं और इसे नहीं समझ सकते हैं, है ना? इसलिए महत्वपूर्ण बात यह है कि इसमें से अधिकांश बहुत स्पष्ट रूप से आता है, लेकिन कभी-कभी अनुवादक ऐसे विकल्प चुन लेते हैं जो चीजों को अस्पष्ट कर देते हैं।

शुक्र है, ये ऐसी चीजें नहीं हैं जो हमारे उद्धार के लिए ज़रूरी हैं। लेकिन इस पतित स्वर्गदूत की व्याख्या के खिलाफ़ तर्कों के बारे में क्या? स्वर्गदूतों और मनुष्यों या अन्य स्वर्गदूतों के बीच विवाह का समर्थन करने के लिए कोई बाइबिल प्रमाण नहीं है। खैर, सबसे पहले, हमने यह समझ लिया कि उस क्रिया का अर्थ ज़रूरी तौर पर विवाह नहीं है, लेकिन हम इसे छोड़ देंगे।

लोग अक्सर यीशु द्वारा स्वर्गदूतों के बारे में कही गई बातों का हवाला देते हैं, और वे उसे यह देते हैं: वे सद्रूकी जो पुनरुत्थान में विश्वास नहीं करते थे, यीशु के सामने यह समस्या रखते हैं, जिसे वे असाध्य मानते हैं। तो, यहाँ एक महिला है जिसके सभी पति, सभी भाई, क्षमा करें, सभी भाई हैं, और इसलिए वे सवाल उठाते हैं, ठीक है, उसके सभी भाई हैं, पुनरुत्थान के समय, वह किसकी पत्नी होगी? चूँकि उन सभी के पास वह थी। वे सभी उससे विवाहित थे।

और यीशु ने उत्तर दिया कि तुम गलत हो क्योंकि तुम शास्त्रों या परमेश्वर की शक्ति को नहीं जानते। पुनरुत्थान के समय, लोग न तो विवाह करेंगे और न ही विवाह में दिए जाएँगे। वे स्वर्ग में स्वर्गदूतों की तरह होंगे। ठीक है, चलो बस रुकें और गैरेट क्या कहता है, इस पर ध्यान न दें, लेकिन आइए यहाँ तर्कसंगत रूप से सोचने की कोशिश करें, ठीक है? यीशु स्वर्ग में स्वर्गदूतों के बारे में बात कर रहे हैं, और वह इस बारे में बात कर रहे हैं कि वे क्या करते हैं और क्या नहीं करते हैं।

यदि स्वर्गदूतों की व्याख्या सही है, तो उत्पत्ति 6 में पतित स्वर्गदूतों के बारे में बात की गई है। यीशु पतित स्वर्गदूतों के बारे में बात नहीं कर रहे हैं, और वे इस बारे में बात नहीं कर रहे हैं कि स्वर्गदूत क्या करने में सक्षम हो सकते हैं। वे केवल पवित्र स्वर्गदूतों, स्वर्ग में स्वर्गदूतों, और उनके द्वारा किए जाने वाले और न किए जाने वाले कार्यों के बारे में बात कर रहे हैं।

वे ऐसा नहीं कर सकते। इसलिए, वास्तव में इनका कोई संबंध नहीं है। यह उत्पत्ति 6 की स्वर्गदूतीय समझ का प्रतिरूप नहीं है। मैं स्वर्गदूतीय व्याख्या पर जोर नहीं दे रहा हूँ, हालाँकि मुझे लगता है कि यह सही है, लेकिन अगर कोई सबूत पेश कर सकता है, तो मैं इसके विपरीत राजी होने पर पूरी तरह से खुश हूँ।

मैं बस इतना कह रहा हूँ कि सबूत इस ओर इशारा करते हैं, और इस मामले में यीशु ने जो कहा वह इसके खिलाफ कुछ भी नहीं है, और यह स्पष्ट रूप से सोचना और समझना महत्वपूर्ण है। खैर, मेरे पूर्व सहयोगी, ड्वेन गैरेट, इस पुस्तक में, एन्जिल्स और नई आध्यात्मिकता, जो एक और पुस्तक है जिसकी मैं अत्यधिक अनुशंसा करता हूँ। जब मुझे स्वर्गदूतों और राक्षसों और इन सब में दिलचस्पी हुई, तो मैंने सोचा कि मैं इसके बारे में एक किताब लिख सकता हूँ।

फिर मैंने उनकी किताब पढ़ी, और मैंने कहा, ठीक है, उन्होंने वह सब कुछ कह दिया जो मैं कहना चाहता था, इसलिए यह वह किताब है जिसे मुझे लिखने की ज़रूरत नहीं है। यह बहुत बढ़िया है, और यह वास्तव में एक अच्छी किताब है। लेकिन उन्होंने इस मामले के बारे में कहा, उत्पत्ति 6, संक्षेप में, प्राचीन हिब्रू इसका अर्थ यह लेंगे कि स्वर्गदूतों ने किसी तरह पुरुषों के रूप में भौतिक रूप धारण किया और महिलाओं के साथ यौन संबंध बनाए, और इसी तरह प्राचीन यहूदी व्याख्याकारों ने इसे लिया।

यह वास्तव में यीशु की शिक्षा का खंडन नहीं करता है कि स्वर्गदूत विवाह नहीं करते हैं, और इस प्रकार संभवतः लिंग के बिना होते हैं, क्योंकि स्पष्ट रूप से स्वर्गदूत यहाँ जो करते हैं वह अवैध है और उनके उचित स्थान को त्यागने का प्रतिनिधित्व करता है। मुझे संदेह है कि आधुनिक लोगों द्वारा इस व्याख्या को अस्वीकार करने का वास्तविक कारण यह है कि वे इसे बहुत दूर की कौड़ी

मानते हैं, और मुझे लगता है कि यह एक बहुत ही उचित कथन है। खैर, इसके खिलाफ अन्य तर्क हैं, अच्छा, रुको, परमेश्वर ने स्वर्गदूतों द्वारा किए गए किसी काम के लिए मानवता को दंडित क्यों किया? इसलिए, वाल्टर कैसर, ओल्ड टेस्टामेंट के विद्वान, गॉर्डन कॉनवेल के पूर्व अध्यक्ष, ने अपनी पुस्तक *हार्ड सेइंग्स ऑफ़ द ओल्ड टेस्टामेंट में कहा*, वे कहते हैं, ठीक है, अगर बी'नाई एलोहिम स्वर्गदूत थे, तो भगवान को स्वर्ग में जलप्रलय करना चाहिए था, न कि पृथ्वी पर।

अपराधी ऊपर से आए थे। ऐसा लगता है कि महिलाएँ सुंदर दिखने के अलावा कुछ नहीं कर रही थीं। खैर, लेकिन, आप जानते हैं, बयानबाजी के तौर पर, यह बहुत अच्छा है, लेकिन तथ्य यह है कि मार्ग हमें बताता है कि भगवान ने बाढ़ क्यों लाई, और यह मानव दुष्टता की वृद्धि के कारण था।

और इसलिए, मुझे लगता है कि स्वर्गदूतों के दृष्टिकोण में इस तरह की समझ शामिल होगी। अर्थात्, मानव पाप में वृद्धि इतनी बुरी थी कि ऐसी बात होना संभव हो गया। स्वर्गदूतों के प्राणी, पतित, दुष्ट, मनुष्यों का रूप धारण कर लेते थे और वही करते थे जो वे चाहते थे।

यह उस बात के समानांतर हो सकता है जो हम अंत में देखते हैं, जब बुराई के बढ़ने के कारण, भगवान 2 थिस्सलुनीकियों के शब्दों का उपयोग करके उन पर एक शक्तिशाली भ्रम भेजते हैं और उन्हें झूठ पर विश्वास करने देते हैं क्योंकि वे सच्चाई नहीं चाहते हैं। उस तरह के वैश्विक सांस्कृतिक संदर्भ में, और अब यह वैश्विक है या होगा, एक एंटीक्रिस्ट और उसके पैगंबर के लिए आना और संकेत और चमत्कार करना संभव होगा, और लोग इससे भयभीत होंगे, और वे सोचेंगे कि यह भगवान है क्योंकि उनके पास यह समझने के लिए आध्यात्मिक साधन नहीं होंगे कि यह शैतान का काम है। और मुझे लगता है कि आप उत्पत्ति 6 में इसका एक प्रारंभिक संस्करण देख सकते हैं। यह पूरी तरह से अच्छा अर्थ होगा।

यह प्रमाण नहीं है, लेकिन अगर स्वर्गदूतों की गिरती हुई परी की समझ सही है तो यह समानांतर होगी। खैर, स्वर्गदूतों के दृष्टिकोण के खिलाफ़ एक और तर्क का हवाला देते हुए, अगर आपने कभी कैल्विन के संस्थान को पढ़ा है, तो मैं इसकी अनुशंसा करता हूँ। यह बहुत बढ़िया सामग्री है। उनकी टिप्पणियाँ बहुत अच्छी हैं; हर किसी से हर बात पर सहमत होना ज़रूरी नहीं है, लेकिन इस मामले में, वे कहते हैं, ठीक है, महिलाओं के साथ स्वर्गदूतों के संभोग के बारे में यह प्राचीन कल्पना अपनी ही बेतुकी बातों से पूरी तरह से खंडन की गई है, और यह आश्चर्यजनक है कि विद्वान लोग पहले इतने घिनौने और विलक्षण बकवास से मोहित हो जाते थे। जिसे पढ़ना मज़ेदार है, लेकिन वास्तव में, आप जानते हैं, अगर आप इसे बहुत गंभीरता से देखते हैं, तो आप सोचना शुरू कर देते हैं, ठीक है, एक मिनट रुकिए, किसी को मृतकों में से जीवित करना या किसी को मिर्गी से ठीक करना, आप जानते हैं, सिर्फ़ प्रार्थना करके, कौन इस पर विश्वास कर सकता है? यह भी उतना ही हास्यास्पद लगता है, इसलिए यह मानदंड नहीं हो सकता है, आप जानते हैं, आधुनिक तर्क भगवान के व्यवहार या बुरी आत्माओं के व्यवहार के लिए सीमाएँ निर्धारित करेगा। यह उन प्राणियों के कार्यों के मापदंडों को परिभाषित करने का सही तरीका नहीं है।

तो, लेकिन यह कैल्विन है। दूसरी व्याख्या जिसका मैं संक्षेप में उल्लेख करूँगा वह शाही व्याख्या है। यह मेरेडिथ क्लेन द्वारा पढ़ाया गया था जब मैं एक छात्र था, और उस समय, मैंने सोचा, हाँ, ठीक है, यह समझ में आता है।

शाही व्याख्या यह है कि ईश्वर के पुत्र प्राचीन निकट पूर्वी राजा हैं जो जितनी चाहें उतनी स्त्रियाँ रखते थे; उन्होंने निश्चित रूप से ऐसा किया, और यह सच है कि कभी-कभी वे खुद को दिव्य संतान कहते हैं। मिस्र में, फिरौन हमेशा दिव्य संतान था। वह सूर्य देवता का अवतार था।

मेसोपोटामिया में, कुछ राजाओं ने ईश्वरीय संतान होने का दावा किया, लेकिन अन्य ने ऐसा नहीं किया। लेकिन बात यह है कि प्राचीन निकट पूर्वी राजाओं को किसी भी प्राचीन निकट पूर्वी शिलालेख में प्राचीन निकट पूर्वी राजा या उनके किसी भी समूह को किसी देवता या भगवान के पुत्र के रूप में संदर्भित नहीं किया गया है। इसलिए, इस शब्द के बारे में सख्ती से बात करें तो इसका इस्तेमाल इस तरह से नहीं किया जाता है।

इसके लिए कोई अतिरिक्त बाइबिल प्रमाण नहीं है। इसलिए, मुझे नहीं लगता कि यह एक अच्छा तर्क है। सेथाइट व्याख्या यह है कि ईश्वर के पुत्र सेठ के वंशज हैं, और उन्होंने कैन की वंशावली से बेटियों से विवाह करने का पाप किया।

और यह कुछ इस स्थिति को फिर से पढ़ने जैसा लगता है जो बाद में मूसा के कानून में दिखाई दे रहा है। मूसा के कानून में, उन्हें कैनानियों से शादी नहीं करनी थी। लेकिन बाइबल में इस बिंदु पर ऐसा कुछ भी नहीं है जो कहता है कि धर्मी पुरुष, हम कहें, शोधियों, कैनियों, कैन की बेटियों से शादी नहीं कर सकते।

किसी भी मामले में, जैसा कि वॉन राड ने भी सुझाया है, यहाँ ईश्वर के पुत्रों और मनुष्यों की बेटियों के बीच एक बहुत ही जानबूझकर किया गया अंतर प्रतीत होता है। कैनाइट बेटियों को कैन की बेटियों के बजाय मनुष्यों की बेटियाँ क्यों कहा जाना चाहिए, यह समझना थोड़ा मुश्किल है। इसलिए, बहुमत का दृष्टिकोण यह रहा है कि ईश्वर के पुत्र पतित स्वर्गदूत हैं, और मुझे लगता है कि अधिकांश साक्ष्य इसी ओर इशारा करते हैं।

लेकिन शुक्र है कि हमारा उद्धार इस मुद्दे पर हमारे दृष्टिकोण पर निर्भर नहीं करता है। तो यह बात यहीं समाप्त होती है, और हम आगे नूह की वाचा के बारे में बात करेंगे।

यह डॉ. जेफरी नीहौस द्वारा बाइबिल धर्मशास्त्र पर उनके शिक्षण में है। यह सत्र 3 है, पतन के बाद आदम की वाचा।